कम्प्रोमाइज

..

कम्प्रोमाइज

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

COMPROMISE
A Play in Maithili Language by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-38-4
दाम: 200/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवारी लगौनिहार एवम्

नव विहान अननिहारकेँ

समरपित



पात्र परिचय

पुरुष पात्र-

(1)	नसीवलाल-	किसानक अगुआ, 65 बर्ख
(2)	सुकदेव-	बटाइ किसान (बटेदार) 64 बर्ख
(3)	मनचन-	बटेदार, 40 बर्ख
(4)	सोमन-	बटेदार, 45 बर्ख
(5)	रघुवीर-	तीमन-तरकारी उपजौनिहार, 45 बर्ख
(6)	रामरूप-	बटेदार, 44 बर्ख
(7)	कर्मदेव-	बी.ए. पास युवक
(8)	प्रो. कृष्णदेव-	50-55 बर्ख
(9)	दिनेश-	मैट्रिकक छात्र
(10)	शिव शंकर-	एजेन्ट (बोरिंग-दमकल)
(11)	घनश्याम-	बैंक मैनेजर
(12)	बहादुर-	नोकर
(13)	मनमोहन-	इंजीनियर
(14)	सन्तोष-	एग्रीकल्चर ग्रेजुएट
(15)	डॉ. रघुनाथ-	सेवा निवृत डॉक्टर, 60 बर्ख

नारी पात्र-

(1)	अनुराधा-	डॉ. रघुनाथक पत्नी, 58 बर्ख
(2)	सुधा-	कृष्णदेवक बेटी। हाइ स्कूलक छात्रा
(3)	शान्ती-	पंचायत मुखिया, 25 बर्ख
(4)	आभा-	शिक्षिका, 22 बर्ख
(5)	सोनिया-	सुकदेवक पत्नी, 60 बर्ख

पहिल दृश्य

(आसिन मास। रौदियाह समय... ।)

सोनिया- अपनो नार सधि गेल। काल्हि मनोहर मामागामसँ आनए गेल। दुइयो-चारि बल्हीक ओरियान अपनो नै करब तँ माल-जालकेँ कथी खाइले देबइ?

सुकदेव- मनमे तँ अपनो अछि, मुदा छुछ हाथ थोड़े मुँहमे जाइ छइ।

सोनिया- कोनो कि अन्न नै खाइ छी जे नइ बुझब। मगर दुआरपर जेकरा गरदैनमे डोरी बन्हने छिऐ तेकर निमरजना केकरा करए पड़तै?

सुकदेव- (मुड़ी डोलबैत... ।) जेकरा पाइ छै ओ आनो गामसँ कीनि आनत। मुदा..?

सोनिया- 'मुदा' कहने समय मानत? कोनो ओरियान तँ करैये पड़त।

सुकदेव- (तरहत्थीसँ आँखि मलैत... ।) ने एक्को मुट्ठी नार अछि, ने बाधमे घास अछि आ ने बाँसक पत्ता एक्कोटा हरियर अछि। आन साल अधियोपर तोड़ै छेलौं तैयो कहुना कऽ काज चला लइ छेलौं। ऐ बेर सेहो सभटा झड़किये गेल।

देखियौ की होइ छइ..!

सोनिया- ताबे ओहिना ठाढ़ रहत। दुआरपर लक्ष्मी कलपने परतवाए केकर हेतइ?

सुकदेव- गाममे केकरो देखबो कहाँ करै छिऐ जे दू मुट्ठी मांगियो लेब। जिनका सभकेँ बेसी होइतो छैन ओ तँ अपने पाछू तबाह छैथ आ जेकरा छैहे नहि ओ तँ अपनो पइत नहि बँचा सकैए, दोसरकेँ की बँचौत। तहूमे दुइए-चारि दिनक बात रहैत तखन ने। ऐ बेर नइ भेने ऐगलो साल तेहने हएत।

सोनिया- छुच्छे सोग केने चिन्ता मेटाइ छइ। जखन दिने उनटा भऽ गेल तखन सुनटा सोचने हएत?

सुकदेव- (बेबस होइत...।) की उपाय करब! जखन समैये संग छोड़ि देलक तखन जीबैक केते भरोस करब।

सोनिया- ई अहींटा बुझै छिऐ आकि आरो लोक?

सुकदेव- की उपाय करब?

सोनिया- उपाय की करब! जेहेन समय बनल तेहेन बनि जाउ। तखने किछु पारो-घाट लागत। नहि तँ..!

(सुकदेव सोनियाक मुँह दिस बघजर लगल जकाँ टकटकी लगा ताकए लगल, सुकदेवक आँखि सोनिया पढ़ि...।)

चलू दुनू गोरे, मरहन्नाक जे बुट्टी-बाटी भेटत सेहो काटि लेब आ केतौ-केतौ जे चिचोर सभ छै सेहो काटि कऽ लऽ आनब।

सुकदेव- बेस कहलौं! जाबे बरतन ताबे बरतन। हाँसू नेने आउ। खोलियापर चुनौटी अछि सेहो लऽ लेब।

(सोनिया चलि जाइत अछि। मनचनक प्रवेश... ।)

मनचन- भैया, जान बँचाएब भारी भऽ गेल!

सुकदेव- से की?

मनचन- कलक पानि बन्न भऽ गेल। पानियेँ ने खसै छइ!

सुकदेव- से की भेलह?

मनचन- पान-सात दिनसँ मटियाह पानि अबै छेलइ। ओकरा फड़िछा कऽ कहुना काज चलबै छेलौं। काल्हि सँ ओहो बन्न भऽ गेल!

सुकदेव- दोसर कलसँ काज चलाबह?

मनचन- एँह, कोनो कि एक्केटा कल बन्न भेल। टोलक सभ कलक सएह हाल अछि!

सुकदेव- तखन पीबै की छह?

मनचन- पोखैरक पानि पीबै छी। ओहो लटपटाएले अछि।

सुकदेव- बौआ की करबहक। आखिर ऐ धरतीपर अपना सभ (मनुख) नै किछु करबहक तँ माल-जाल आकि चिड़ै-चुनमुनी बुते हेतइ। देखै नै छहक जे केते रंगक चिड़ै पड़ा गेल।

मनचन- भैया, तोरे सबहक मुँह देखि जीबै छी। सबहक गति एक्के देखै छिऐ। तामसो केकरापर करब। ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। ने देहक ठेकान अछि आ ने देखनिहारक

ठेकान अछि। तखन तँ जाबे हाथ-पएर घिसियाइए, घिसियबै छी!

सुकदेव- अखन जाह। निचेनमे करवनो गप करब। दू मुट्ठी मालक ओरियान करए जाइ छी। देखहक जे आसिन मास जकाँ एक्कोरत्ती लगै छइ। अखुनका ओससँ खढ़-पात डगडगाइत छल, से केहेन उखड़ाह लगै छइ!

मनचन- ऐसँ नीक तँ जेठमे छेलइ। जेठोसँ खरहर समय लगै छइ! एकटा बात मन पड़ल।

सुकदेव- की?

मनचन- ऐसँ पैछला रौदी नमहर रहै कि छोट?

सुकदेव- तोरा केहेन बुझि पड़ै छह?

मनचन- नमहर बुझि पड़ैए!

सुकदेव- ओ चारि सालक भेल रहए। एकरा तँ सालो ने लगलै हेन।

मनचन- हमरा नमहर बुझि पड़ैए।

सुकदेव- दिन बितने लोक दुखो बिसैर जाइ छइ। तोरो सएह भेलह।

मनचन- नहि भैया, से नहि भेल। विधने मोटका कलमसँ लिखि देने छैथ तँए ने मन रहैए।

(मुस्की दैत... ।)

मुदा एकटा बात कहै छिअ।

सुकदेव- की?

मनचन- हम सभ तँ जानियेँ कऽ गरीब छी, तँए बुड़िबक छी। मुदा जेकरो विधना मेहिक्का कलमसँ लिखलखिन ओहो तँ केंकियाइते अछि।

सुकदेव- अखन जाह, काजक बेर उनैह जाएत। एकटा बात मन रखिहह। पैछला शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेलइ। एक सालक रौदी लोककेँ चारि बरख पाछू ठेलै छइ।

(दूटा हाँसू नेने सोनियाक प्रवेश... ।)

सुकदेव- (स्वयं... ।) केतए गेल पचास बर्खक जिनगी। पानिक दुआरे कोसी-नहर आ शक्तिक लेल पनिबिजली जँ बनल रहैत तँ की औझुके जकाँ मिथिलांचलवासीकेँ पड़ाइन लगितै? चिड़ै जकाँ उड़ैत-उड़ैत लोक चिड़ै बनि गेल। चिड़ै बनने मनुख, मनुख कहबैक जोग रहत। जेकरा अपन बाप-दादाक बनौल सुन्दर गाम-घर छै ओ घर छोड़ि घुरमुरिया खेलाइए! खाएर..!

(सोनिया दिस तकैत... ।)

तमाकुल अनलौं आकि ओहो सठि गेल?

सोनिया- (मुँह चमकबैत... ।) सुआइत लोक कहै छै- 'जुन्ना जरि गेल मुदा ऐंठन नहि गेल!' पेटक ओरियान रहए कि नइ रहए, मुदा मुँहमे सुपारी चाहबे करी..!

सुकदेव- सुपारीक मर्यादा की छै से अहीं बुझबै। सुपारी खेनाइक अंग छी जे खेनाइ खेलोपरान्त अतिथि-अभ्यागतकेँ विदाइ स्वरूप देल जाइ छइ। सुपारियो-जोकर मान-मर्यादा जइ पुरुखमे नहि रहल ओ पुरुख पुरुख थोड़े

भेल, ओ तँ हिजरोसँ बत्तर भेल!

सोनिया- बुझलौं-बुझलौं! साँप फुसलबैक मनतर।

(विचार बदलैत)

एकटा बात पुछौं?

सुकदेव- एक्केटा किए बात पुछब, एक हजार पुछू।

सोनिया- पेटक आशामे पेट काटि भरै छी आ घर अनैकाल टुटरूमटुम भऽ जाइए। छोड़ि दियौ बटाइ खेती।

(सोनियाक विचार सुनि सुकदेव ऊपर-सँ-निच्चाँ धरि निंग्हारि नजैर चेहरापर अँटका, अपन पैछला जिनगीपर दौगबैत, ऐना जकाँ देखए लगल। तरपैत मने... ।)

सुकदेव- जखन अपना धन-वित्त नहि अछि तखन..?

सोनिया- तखन की?

सुकदेव- बटाइयो खेती केने अपन जिनगी तँ ठाढ़ केने छी। मारि-धुसि खटै छी, भरि पेट आकि अदहा पेट खाइ तँ छी। जँ ईहो छोड़िये देब तँ की गोबर-गोइठा जकाँ केतौ पड़ल रहब?

सोनिया- बड़ीटा दुनियाँ छइ। जेतए पेट भरत ते तए देह धुनि जिनगी बिताएब।

सुकदेव- ई तँ बुझै छी जे हाथ-पएर लाड़ने केतौ पेट भरत। मुदा जे फुलबाड़ी (गाम) बाप-दादाक लगौल अछि, जेतए मनुख जकाँ मनुख बनि सभ दिन जीबैत एलौं, तेकरा छोड़ि..?

सोनिया- की आनठाम मनुख नइ रहै छइ?

सुकदेव- हँ, रहै छइ। मुदा मनुख-मनुखक आ समाज-समाजक बीच भुताहि गाछी, मरुभूमि, पहाड़ आ समुद्र सदृश भाषा आ काज बेवहारसँ जिनगी अदैल-बदैल गेल अछि, जइसँ एते खाधि मनुख-मनुखक बीच बनि गेल अछि। कियो केकरो देखौ ने चाहैए। एहेन स्थितिमे..?

सोनिया- कोनो कि खुट्टा गाड़ि सभदिन रहब जे अनेरे एते माथा धुनि देहक हड्डी झकझकबै छी। बुझिते तँ छिऐ जे घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे।

सुकदेव- बाप-दादाक फुलबाड़ी ओ नहि, जे सिरिफ समैया फूलक होइ। बाप-दादाक फुलबाड़ी ओ छिऐन जइमे फूलक गाछक जड़िमे कुण्डली राखल अछि।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 982

दोसर दृश्य

(सुकदेव सोमन ऐठाम जाइतकाल, बाटमे... ।)

सुकदेव- (उत्तेजित होइत) पचास बर्खसँ किसान-बोनिहारक संग मिलि कोसी नहरक पानिसँ खेतियो आ बिजलियोक सपना पूरा हएत तइ आशामे रहलौं। मुदा आइ की देखै छी? घरमे अन्न नहि, खेतमे पानि नहि, मशीनक नामो-निशान नहि! यएह स्वराज साठि बर्खक छी? की हमसभ टकटकी लगौने मरि जाइ? मुदा ऐ उमेरमे कएले की हएत। भगवान बुढ़ाड़ी दैते किए छथिन। जँ दइ छथिन तँ जीबैक जोगार किए ने कए दइ छथिन। की टकटकी लगा आँखि पथरा परान तियागि दी। उसैर रहल अछि गामक चास-बास, उसैर रहल अछि पशुधन, उसैर रहल अछि गामक खेत-खरिहाँन, उसैर रहल अछि गामक कला-संस्कृति..!

(सोमनक घर। आँगनसँ निकैल सोमन देह खोलने कन्हापर धोती नेने नहाइले विदा भेल... ।)

सोमन- सबेरे-सबेरे केमहर-केमहर भैया?

सुकदेव- एलौं तँ तोरेसँ किछु विचार करए मुदा तोरा देखै छिअ जे केतौ जाइक सुर-सार करै छह?

सोमन- हँ भैया, कनी हाटपर जाएब, तँए धड़फड़ाएल छी। मुदा जखन आबि गेलह तँ किछु इशारोमे कहि दाए। जखन भेँट भऽ गेलिय तखन चुपे-चाप चलियो केना जेबह।

सुकदेव- गप तँ गप छी, दोसरो घड़ी हएत। मुदा काजमे बाधा भेने तँ काज मारल जाएत। काज मरने जिनगी मरै छइ। एक तँ समैये तेहेन दुरकाल भऽ गेल जे ओहिना सभ पटपटाइए। तहूपर जँ जोगारो बाधित हएत तखन तँ आरो तबाही बढ़त।

सोमन- गप जे कहि देने रहबह तँ रस्तो-पेरामे सोचैत-विचारैत रहब। ओमहरसँ–माने हाटसँ–घुमब तँ भेँट केने एबह।

सुकदेव- गप तँ नमहर अछि। मुदा तोरो बेर परहक भदबा बनब नीक नहि। अच्छा साँझमे भेँट हेबह किने?

सोमन- हाट जाएब अनठाइयो दैतिऐ। मुदा आइ सोमक हाट छी। कहैले तँ दूटा हाट लगै छै मुदा सोमक हाटक मोकाबला वरस्पैतक हाट थोड़े करत।

सुकदेव- से की?

सोमन- सोमक हाटमे सीतामढ़ीक वेपारीसँ लऽ कऽ सुपौल, फारविसगंज धरिक वेपारी अबै छइ। छह दिन ओकरा सभकेँ अबै-जाइमे लगै छइ। तहूमे गाए-बरदक पएरे एनाइ-गेनाइ सेहो रहै छइ।

सुकदेव- हँ, से तँ लगिते हेतइ। तैयो, ओही वेपारी सभकेँ धन्यवाद दिऐ जे एते मेहनत करैए।

सोमन- अनठौने नै बनत भैया। बहरबैया वेपारी सभ मुइल-

टुटल सभटा उठा लइए।

सुकदेव- केहेन कारोबार ओकरा सबहक छै जे मुइल-टुटल सभटा कीनि लइए?

सोमन- छीहे धड़फड़ाएल, भैया। नहि तँ सभ बात बुझा देतियह। एको मुट्ठी नार-पात नइ अछि तँए देहमे कछमछी लागल अछि। खढ़-पानि-ले जे गाए-मालकेँ हुकरैत देखै छिऐ तँ मन घोर-मट्ठा भऽ जाइए! ओना..?

सुकदेव- की ओना?

सोमन- बेर परहक बात बजने बेसी नीक होइ छइ। खाएर, कनी देरीए ने हएत, ओतेक लफैर कऽ चलि पुरा लेब। अपना गाममे हाटे ने होइए, नहि तँ जीबैक एकटा बाट लोककेँ खुजि जइतै।

सुकदेव- हँ, से तँ होइतै। तोरो देरी हेतह।

सोमन- की करब भैया, चारू दिससँ घेराएल छी। तेहेन समय भऽ गेल अछि जे अपनो सबहक जान बँचब कठिन!
(दू डेग आगू बढ़ैत सुकदेव... ।)

सुकदेव- कनी-मनी पूजियो तोड़ि कऽ पहिने मनुखक जान बँचाबह, बादमे बुझल जेतइ।

सोमन- जाबे साँस अछि ताबे तँ आशामे हाथ-पएर लाड़बे-चाड़बे करब। अजगरो तँ अपन जिनगीक ओरियान करिते अछि।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 463

तेसर दृश्य

(मवेशी हाट। माल-जालक संग अनो-पानि आ तीमनो तरकारी...।)

(सोमन आ रामरूप...।)

रामरूप- गोधियाँ, मालक मन्दी आबि गेल अछि। दोसर कोनो बाटे नइ सुझल, तँए कनी-मनी घटो लगा कऽ बेच लेलौं। तोहर केहेन रहलह?

सोमन- (मुस्कियाइत...।) हमरा सुतरल! सुपौलिया वेपारी पकड़ाएल। अपन मन तँ झुझुआइते छेलए। पौंरुके तीन हजारमे बरद किनने छेलौं। लार-पातक दुआरे अदहो देह नइ छेलइ। मनमे छेलए जे पाँच बरख मारि-धुसि जोतबो करब आ तेकर बादो बेचब तैयो दाम आबिए जाएत, मुदा की करितौं खुट्टा उसरन भऽ गेल!

रामरूप- अही दुआरे हमहूँ बेच लेलौं। तेहेन धन छेलए जे मनसँ नइ जाइ छेलए, मुदा रखबो करितौं तँ खाइले कथी दैतिऐ! महिना दिनसँ कपैच-कुपैच कऽ खाइले दइ छेलिऐ। मुदा परसू आबि कऽ ओहो सधि गेल। अन्तिममे गठुल्ला घर उछेहलौं जे दू दिन चलल।

सोमन- घरक उछेह खुआ लेलह तँ फेर घर?

रामरूप- खुट्टापर जेकरा बान्हि कऽ रखने छेलिऐ ओकरा जे अदहो पेट खाइले नै दैतिऐ से केहेन होइत। जखने थैरमे जाइ छेलौं कि हुकरए लगै छेलए। ओकर कलपैत मन देखि अपनो मन कलैप जाइ छल, तँए सोचलौं जे बरसात तँ ऐगला साल औत, बुझल जेतइ।

सोमन- (मुड़ी डोलबैत... ।) हँ से तँ ठीके। जैठाम एक दिन पार लगब कठिन अछि तैठाम साल भरि आगूक सोचब बुड़िबक्कीए ने हएत।

रामरूप- आब तँ गामे चलबह किने?

सोमन- हँ, चलब तँ गामे मुदा एकटा काज पछुआएल अछि। चलह एक फेड़ा लगाइयो लेब आ आध मन चाउरो कीनि लेब।

रामरूप- मन तँ हमरो होइए। मुदा मालक पएरे जे एलौं से थाकि गेल छी। मोटरी उठबैक साहसे ने होइए।

सोमन- एँह हद करै छह तहूँ। चलह ने कोनो दोकानपर बैस जलखैयो-चाह करब आ दस मिनट जिराइयो लेब। बुझै छहक जे कहुना पाँच रुपैआ किलो सस्ता भेटतह।

(चाहक दोकान। ब्रेंचपर चाउरक मोटरी रखि रघुवीर सेहो बैसल रहए... ।)

रामरूप- कनी मोटरी घुसका लिअ भाय, की छी मोटरीमे?

रघुवीर- की रहत। चाउर छी। आब कि कोनो भात खाइ छी आकि दिन घीचै छी।

रामरूप- से की?

रघुवीर- अपना सबहक जे अगहनी चाउरमे सुआद आ मस्ती छै से थोड़े ऐ चाउरमे अछि। तखन तँ अपन हारल...।

रामरूप- की भा देलक?

रघुवीर- तँए, कनी मन मानलक। अगहनी चाउरसँ पाँच रुपैआ सस्ता अछि।

रामरूप- गोधियाँ, तब तँ अपनो सभ अध-अध मन लैये लेब किने?

सोमन- हमहूँ तँ यएह सोचि कऽ कहलियह। अखन जँ कनी भीरे हएत तँ तीन दिनक सिदहामे चारि दिन कटि जाएत।

रामरूप- हम सभ पछुआएल छी, तैबीच चाउर सधि ने जेतै, भाय?

रघुवीर- से की अद्दी-गुद्दी वेपारी छी। पाँच गो ट्रक भिड़ौने अछि। मुदा खरँतुआ जकाँ लेबालो ढेरियाएल छइ।

रामरूप- (मोटरी दिस देख...।) तरजू देखै छी। अहूँ कोनो चीज बेचैले आएल छेलौं की?

रघुवीर- हँ, तरकारी उपजेबौ करै छी आ हाटमे बेचबो करै छी। भगवान दसे कट्ठा खेत देने छैथ। ओकरे बीचमे कल गरा देने छिऐ आ बारहो मास तरकारीए उपजबै छी।

रामरूप- सभ किछु बिक जाइए?

रघुवीर- (कनी ठमैक...।) हँ, बिक तँ जाइए, मुदा..?

रामरूप- 'मुदा' की?

रघुवीर- यएह जे तेहेन चिकनियाँ लेबाल सभ भऽ गेल अछि जे चीज चिन्हबे ने करैए।

रामरूप- से की?

रघुवीर- की कहब। लहटगर देखि लोक चीज कीनैए। किड़ी-फतिंगीक बेसी दबाइ हम नइ दइ छिऐ। तइसँ देखैमे समान कनी दब रहैए।

रामरूप- अहाँ किए ने दबाइ दइ छिऐ?

रघुवीर- अपनो खाइ छी किने। देखैमे ने दबाइ देलहा नीक लगै छै जरूर, मुदा जहरक अंश ओइमे रहिये जाइ छै किने। खाएर, भगवान हमरो दिस देखै छैथ?

रामरूप- से की?

रघुवीर- अखनो एहेन कीननिहार छैथ जे हमरे चीजकेँ पसिन करै छैथ। दू-पाइ महगे बिकाइए। अहाँ सभ केतए आएल छेलौं?

रामरूप- (मिरमिराइत...।) की कहब भाय, रौदीक मारल डिरियाइ छी! बरद-गाए बेचए आएल छेलौं। खुट्टा उसरन भऽ गेल!

रघुवीर- (मुड़ी डोलबैत...।) दोसर उपाइये कथी अछि। तेहेन दुरकाल समय भऽ गेल अछि जे लोकोक परान बँचब कठिन अछि। खाएर, माले-जाल गेल किने, पहिने मनुखक जान बँचाउ। पाछू बुझल जेतइ।

रामरूप- अहाँ तँ हाटक तरी-घटी बुझैत हेबइ। कहू जे एते-एते

दूरसँ जे वेपारी सभ अबैए से केना पार लगै छइ?

रघुवीर- एकरा सबहक भाँज बड़ भारी छइ। बड़का-बड़का वेपारी सभ छी। चरि-चरि–पँच-पँच बैच बनौने अछि। गामसँ हाट आ हाटसँ गाम एकबट्ट केने रहैए। अड्डा बना-बना कारोबार पसारने अछि।

रामरूप- एकरा सभले रौदी-दाही नहि छइ?

रघुवीर- (अचम्भित होइत...।) रौदी-दाही! हद करै छी अहूँ। सदिखन घैलापर पाइ चढ़ौने रहैए। जेना अपना सभले रौदी-दाही जनमारा छी तेना ओकरा सबहक अगहन छी। एक बेर रौदी-दाही पेने सेठ बनि जाइए।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 697

चारिम दृश्य

(नसीवलालक घर। दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस नसीवलाल आँखि मुनने किछु सोचि रहल छैथ, तखने सोमनक संग सुकदेवक प्रवेश होइत अछि।)

सुकदेव- नीन छी यौ भाय?

(सुकदेवक बात सुनि आँखि खोलि धड़फड़ाइत... ।)

नवीसवलाल- नहि! नहि! सुतल कहाँ छी। समैयक फेरीसँ चिन्तित भऽ गेल छी। खेलहो अन्न देहमे नै लगैए। एक दिस जहिना भूख पियास मेटा गेल तहिना आँखिक नीन्न सेहो मेटाएल जा रहल अछि। धन्यवाद अहीं सभकेँ दी जे एहनो दुरकालमे हँसी-खुशीसँ जीब रहल छी।

सोमन- हद करै छी भाय! राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लागल बरकुम्मैर कानए।

नसीवलाल- तोहर बात कटैबला नहियेँ छह सोमन, मुदा..?

सोमन- 'मुदा' की?

नसीवलाल- ओना, जे जेतेक पछुआएल अछि ओ ओतेक समस्यासँ गरसित सेहो अछि, मुदा प्राकृतिक बिपैत सभपर पड़ै छइ। तहूमे जे जेतेक अगुआएल रहैए ओकरापर ओतेक बेसी पड़ै छइ।

सोमन-	हँ, से तँ पड़िते छइ।

नसीवलाल-	बौआ, ओना तोहर उमेरे केते भेलह। एक गाममे रहितो कम सम्पर्कमे रहै छह। सुकदेव भाय बतरिया छैथ। तहूमे बच्चेसँ दुनू गोरे गामसँ जहल तक संगे रहलौं। मुदा..?

सोमन-	'मुदा' की?

नसीवलाल-	यएह जे आब बुझि पड़ैए, जे जिनगीए ठका गेल!

सोमन-	से की?

नसीवलाल-	की कहबह आ केतेक कहबह। एकटा कोसीए नहरक बात सुनह। जहिया जुआने रही तहिये-सँ कहै छिअ। बड़ लिलसा रहए जे कोसी-नहर बनत, डैम बनत। नहरक पानिसँ खेत पटत आ डैममे पनिबिजलीक यंत्र बैसत। जइसँ तेतेक बिजली हएत जे घर-दुआरक इजोतक संग करखन्नो चलत..! मुदा सभ आशापर पानि हेरा गेल! आइ जँ बिजली रहैत तँ गामो बजारे जकाँ भऽ गेल रहैत, मुदा... ।

सोमन-	'मुदा' की?

नसीवलाल-	यएह जे ई बात मनसँ मेटा गेल छेलए जे एहेन रौदीसँ भेँट हएत। मुदा.!

सोमन-	'मुदा' की?

नसीवलाल-	अपना संग-संग गामोक कल्याण भऽ जाइत। खेती-पथारीक संग एते छोट-पैघ करखन्ना बनि गेल रहैत जे बेरोजगार केकरा कहै छै से तकनौं नहि भेटैत। मुदा

आइ देखै छी जे गाम-गामक लोक उजैह कऽ दिल्ली-कलकत्ताक संग जहाँ-तहाँ पड़ा रहल अछि!

सोमन- हँ, से तँ भऽ रहल अछि। मुदा माटि फाँकि कऽ तँ मनुख नहियेँ रहि सकैए। जेतए पेट भरतै तेतए ने जाएत।

नसीवलाल- कहलह तँ बेस बात। मुदा गाम ताबे तक नहि हरियाएत जाबे तक गामक सभ बच्चा-बच्चा अपन पएर-पर ठाढ़ भऽ अपन-अपन भविस दिस नहि ताकए लगत।

सोमन- एहेन समय भेने लोक केना ठाढ़ हएत?

नसीवलाल- सएह ने मनकेँ नचा रहल अछि। सभ माए-बाप अपन बेटा-बेटीपर आशा लगौने रहैए जे हमरासँ नीक बनि धिया-पुता गुजरो करत आ नीक जकाँ आगूओ बढ़त। मुदा आँखि उठा दुनियाँ दिस जखन तकै छी तँ चौन्ह आबि जाइए। बाल-बच्चाक कोन गप जे अपन बुढ़ाड़ियो भरिसक कनिते कटत!

सुकदेव- यएह बात मनमे औंढ़ मारलक भाय, तँए एलौं हेन।

नसीवलाल- भाय, कथी विचार करब। छुछ हाथ मुँहमे दइये कऽ की हएत। ने कियो गाम-घरक महत बुझैए आ ने अपन शक्तिक उपयोग करए चाहैए। सभ अपन अमूल्य श्रमकेँ दोसराक हाथे बेच बजारक चकचकीमे वौआए चाहैए।

सुकदेव- यएह सभ देखि ने मन उचैट गेल हेन। मुदा केकरा कहबै आ के सुनत। अहाँ तँ गुल्ली-डन्टासँ अखन धरिक संगी छी। अखन तक जे तीत-मीठ भेल, सभमे

दुनू गोरे संगे छी।

नसीवलाल- (चानि परहक पसेना पोछैत... ।) जहिना माटिक ईंटाकेँ वएह माटि, पानिक संग मिलि जोड़ि-साटि दैत अछि तहिना ने मनुखक सिनेह मनुखक संगे साटि दइ छइ। मुदा सिनेह औत केना? एक दिस धनक भरमार, दोसर दिस भूखल पेट आ तैबीच चोर-उचक्काक सघन बोन अछि! केना लोकक परान बँचतै..?

सुकदेव- सोझहे चिन्ते केनौं तँ नहियेँ हएत। आ ने भगला-पड़ेलासँ हएत। सोचि-विचारि रस्ता धड़ए पड़त। जँ से नहि करब, तँ एक लोटा पानियोँ के देत, आकि एकटा काठियो मुइलापर के देत?

नसीवलाल- भाय, जहिया घोड़दौड़ करैबला छेलौं तहिया तँ करबे ने केलौं, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की हएत? किछु करए लगै छी तँ हाथ-पएर थरथराए लगैए। जइसँ बुझलो काजमे धकचुका जाइ छी।

सुकदेव- भाय, अशे तँ जिनगीक संगी छी, जेकरा लोक जिनगीक रस चुसैत अछि। तेकरो केना छोड़ि देब?

नसीवलाल- (सुकदेवपर आँखि गड़ा मुड़ी डोलबैत... ।) भाय कहै तँ छी लाख टकाक गप। जँ अपनो-जोकर नै सोच-विचार करब तँ अकाल मरबो तँ नीक नहियेँ छी।

सुकदेव- नीक अधला केतए छै भाय! भलेँ लोक अपना जिनगीकेँ स्वार्थी बुझए मुदा जाबे धरि अपने निरोग नै रहब ताबे धरि दोसराक विषयमे सोचियो आकि कैये की सकै छी।

नसीवलाल- हँ, से तँ ठीके। विचारोकेँ प्रभावित तँ जिनगीए करैत अछि। नीक-नीक भाषणे करब आ अपन चालि छुतहरक अछि, तँ ओइ भाषणक महौते की। जहिना विज्ञान थियोरीक संग प्रेक्टिकलो करि कऽ देखबैत अछि तहिना ने नीतिशास्त्र सेहो अछि।

सुकदेव- अखन धरि यएह बुझि ने जीबैत एलौं, मुदा.. ?

नसीवलाल- हँ, समैयक चक्र तँ प्रवल ऐछे मुदा एहनो तँ नहि अछि जेकरासँ सामना नै कएल जा सकैए। जीता-जिनगी हारियो मानि लेब, ओहो तँ..?

सुकदेव- हँ, से तँ उचित नहियेँ अछि। मुदा सामनो तँ..?

नसीवलाल- हँ, कठिन अछि। मुदा लंका सन राक्षसक बीच हनुमान केना..?

सुकदेव- हँ, तहिना।

नसीवलाल- (अपसोच करैत...।) पाछू घुमि तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जरूर चूक भेल। जेना कोसी-नहर आ पनिबिजली-ले सामाजिक स्तरपर ठाढ़ भेलौं तेना बेकतीगत जीवनक बाट छुटि गेल..!

सुकदेव- से की?

नसीवलाल- यएह जे जेना मध्यम किसान छी, अपना खेत अछि तेना ने खेतमे पानिक ओरियान केलौं आ ने परिवारो -जोकर मशीन। जँ से केने रहितौं तँ भलेँ महग काज होइत मुदा जीबैक बाट तँ जरूर धरौने रहैत!

सुकदेव- जखन चारि पैरबला हाथी चुकि जाइए, तखन तँ मनुख

दुइए पैरबला अछि। जइ समय जे चूक भेल, भेल। आइ ने ओ समय बँचल अछि आ ने जिनगीक ओ अंश।

नसीवलाल- अखन धरि तँ हाले-चालमे समय निकैल गेल। काजक गप तँ छुटिये गेल। केमहर आएल छेलौं?

सुकदेव- भाय, अहाँसँ नुकाएल नहियेँ छी। अखन तक जे जीबैक आस बटाइ खेत छल, ओहो टुटि गेल। खेतबलाकेँ तँ खेत रहबे करै छैन मुदा बटेदारकेँ घरोक आँटा गील भऽ जाइ छइ।

नसीवलाल- दुर्भाग्य अछि भाय!

सुकदेव- जेकरा सोन छै ओकरा पहिरनिहार नहि, आ जे पहिरनिहार अछि ओकरा सोन नहि!

नसीवलाल- से तँ अछिए! गामक बारहअना खेत नोकरिहाराक अछि, जे खेती नइ करैए। जखन कि बारहअना लोक खेतीपर जीबैत अछि! मुदा कोन दुख एहेन छै जेकर दबाइ नहि छइ।

सुकदेव- भारी बनरफाँसमे पड़ि गेल छी! अखन तक खेती छोड़ि दोसर लूरि नइ सीखलौं। खांहिसो नइ भेल। मुदा आब घरसँ बाहरो जाएब से कोन लूरि लऽ कऽ जाएब? भीख मांगि खाइसँ नीक अन-पानि बेतरे घरमे परान तियागि देब हएत। अगदिगमे पड़ि गेल छी..!

नसीवलाल- अहूँसँ बेसी बनरफाँस तँ अपना लागल अछि। अहाँ तँ, नइ ऐ गाम तँ ओइ गाम जा कऽ कमाइयो-खा सकै छी,

मुदा... ।

सुकदेव- यएह बात मनमे अहुरिया काटि रहल अछि। जहिना संग-मिलि एते दिन काटलौं तहिना आगूओ केना कटत, तेकर..?

नसीवलाल- कैनतो जीब सेहो नीक नहियेँ..!

(कर्मदेवक प्रवेश... ।)

नसीवलाल- भाय, मन तँ अखनो तेना हुरकैए जे शेष जिनगी जहलेमे बिताएब, मुदा बुढ़ाड़ी... । नवतुरियामे समाजक प्रति कोनो रूचिये ने अछि। रुचियो केना रहत। जहिना परचा-पोस्टरमे परिवारक परिभाषा दैत अछि तहिना समाजक कोन बात जे माइयो-बापकेँ परिवारसँ लोक अलगे बुझैए!

कर्मदेव- काका, हमहूँ सएह पुछए एलौं जे एहेन समय मे घरसँ बिना भागने केना जीब?

नसीवलाल- बौआ, तोरे सभपर समाजक दारो-मदार अछि। मुदा जखन तोंही सभ चिड़ै जकाँ उड़ि पड़ा रहल छह , तखन तँ गाम-समाजक भगवाने मालिक!

सोमन- केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर हे..!

कर्मदेव- काका, जँ जीबैक बाट भेट जाएत तँ किए भागब?

नसीवलाल- बौआ, तूँ तँ पढ़ल-लिखल नौजवान छह। तोरामे ओतेक शक्ति छह जे कुछ कऽ सकै छह। शक्ति जगाबह।

कर्मदेव- अखुनका समयसँ जे अपन तुलना करै छी तँ बुझि पड़ैए जे कारी मेघ लटकल भादोक अमावसियाक बारह बजे

रातिक बीच पड़ल छी।

नसीवलाल- पढ़ि-लिखि कऽ एते निराश किए छह?

कर्मदेव- बुझि पड़ैए जे तेहेन पढ़ाइये पढ़ि लेलौं, जे ने घरक रहलौं आ ने घाटक!

नसीवलाल- ओना जीबैक बाट, बेकती-विशेष सेहो बनबैए आ बना सकैए। मुदा समाजकेँ बनने बिना जेहेन हेबा चाही से नहि बनि सकैए, तँए बेगरता अछि जे दुनू संग-संग बनए। जइले तोरे सन-सन नवयुवकसँ अपेक्षा अछि। फाँड़ बान्हि मैदानमे कुदए पड़तह।

कर्मदेव- कियो तँ काजे देखि ने फाँड़ बान्हत?

नसीवलाल- (अर्द्ध हँसी हँसि...।) अइले समाजकेँ जगाबह पड़तह। जखने समाज नीन तोड़ि सुनत, तखने ओछाइन समेट घरसँ बहरा रस्तापर आबि ठाढ़ भऽ जाएत। जखने ठाढ़ हएत तखने नव सुरूजक रोशनीमे अतीतक गौरव देखत।

कर्मदेव- की गौरव?

नसीवलाल- मिथिला दर्शनक गौरव देखैले ओकर बनैक प्रक्रिया देखए पड़तह। 'संयुक्त परिवार' खाली बजनहि नहि बनतह। बनैक आ चलैक ढंग घड़ए पड़तह। जहिना कोनो बाट कोनो स्थान धरि पहुँचबैत अछि तहिना मिथिला दर्शन छी!

कर्मदेव- की दर्शन?

नसीवलाल- एते औगताइमे नइ बुझि सकबहक। अखन हमहूँ

औगताएले छी। मालो-जालकेँ पानि नै पीएलौं हेन, हुकरैए।

कर्मदेव- तरवन?

नसीवलाल- सौंसे समाजक बैसार बरहम स्थानमे करह। सबहक विचारसँ एकटा रस्ता ताकि, आगू डेग उठाबह।

कर्मदेव- आइये बैसार करब।

नसीवलाल- एते धड़फड़ेने काज नै चलतह। कौल्हुका समय बना काने-कान सभकेँ पहिने जना दहुन।

कर्मदेव- बेस।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1373

पाँचम दृश्य

(समय- बेरुपहर, बरहम स्थानक परतीपर बैसार।)

सुकदेव- (ठाढ़ भऽ कऽ...।) भाय-बहिन लोकैन! जेते दिन अपना सबहक अजादीकेँ भेल, ओते उमेर हमरो भेल। किएक तँ कोसी नहर-ले नसीवलाल भाइक संग सरकारी ऑफिसमे करीब पचास बर्खसँ धरना, प्रदर्शन आ सभाक संग जहलो जाइत-अबैत रहलौं। रौदी बिसरए लगल छेलौं, आशा एतेक जगि गेल छल जे रौदीसँ भेँट नइ हएत। मुदा ऐ बेरक रौदी तेना सिखा रहल अछि जे सभ केलहा पानिमे चलि गेल! जहिना सबहक जान अवग्रहमे पड़ल अछि तहिना तँ अपनो अछि।

सोमन- (बैसले-बैसल।) करबो तँ पानियेँ-ले ने केलौं। पानि-ले केलहा पानिमे गेल!

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ कऽ।) लंगोटिया संगी सुकदेव भाय छैथ। बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। दुनू गोरेक बीच अ न्तर एतबे अछि जे हमरा अप्पन खेत अछि आ हुनका अपन नइ छैन। मुदा करै छी दुनू गोरे खेतीए। अपना खेत रहितो आशा-अशीमे रहि गेलौं, तैबीच जिनगीए ससैर गेल..!

सोमन- एक दिस नहर खुनाइ होइए आ दोसर दिस ढहि-ढहि भोथाइए आ बीचमे सरकार मदारी-नाच पसारने अछि!

नसीवलाल- खेती-ले पानि ओहने जरूरी अछि जेहने मनुख आ माल-जाल-ले। बिनु पानियेँ खेती भाइये ने सकैए। जइ हिसाबसँ नहर खुनाइ शुरू भेल, जँ खुना गेल रहैत तँ अपना सभ बहुत अगुआ गेल रहितौं। मुदा की देखै छी..!

कर्मदेव- कनी फरिछा कऽ कहियौ, काका?

नसीवलाल- (हँसैत...।) बौआ, गामक बात बड़ नमहर अछि तँए ओते नै कहि, अपन बात कहै छिअह। दस बीघा जोत जमीन अछि, आ बाँकी गाछ-बेख आ खरहोरि इत्यादिमे बरदाएल अछि। बारह मासक सालमे तीनटा मौसम–जाड़, गरमी, बरसात–होइए। मौनसुनी बरखासँ बरसातमे काज चलैए। बाँकी, सालक आठ मास ओहिना रहैए।

सोमन- गोटे-गोटे बेर झाँटो आ पथरो खसैए।

नसीवलाल- हँ, हँ, सेहो होइए। अपन देश मूलत: किसानक देश छी। खेती-पथारी अपना देशक मुख्य बेवसाय भेल, जे अदौ-सँ-अखन धरि चलि आबि रहल अछि। मुदा, जे समयपर बरखा भेल तखन तँ किसानक मन हरियाएल रहल, नहि तँ सालो भरि मरचुन्नी जकाँ...। प्रश्न अछि, पान खाएल मुँह मुस्कियाइत रहए। जैठाम लोक पानिक जोगार केने अछि ओइठाम हरियरी अछि, उन्नैतक रस्ता

पकैड़ आगू मुहेँ ससैर रहल अछि, खेतक बले रंग-बिरंगक करखन्नो ठाढ़ केने अछि। मुदा अपना सबहक जइड़े सुखाएल अछि तखन ऊपर केना पोनगत?

कर्मदेव- समस्या तँ भारी अछि?

नसीवलाल- जुगक अनुकूल भारी नै अछि। किएक तँ आइ हम सभ ओइ जुगमे पहुँच गेल छी जइ जुगमे एहेन-एहेन समस्या धिया-पुता खेल सदृश अछि। मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की?

नसीवलाल- 'मुदा' यएह जे जेकरा हाथमे काज करैक भार छै ओकर नेते भंगठल छै, कोन काज केना हएत तइ दिस नजरिये ने जाइ छइ!

कर्मदेव- तखन की करब?

नसीवलाल- अखन बहुत बात बजैक समय नहि अछि। जइ काज-ले सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन, पहिने तैपर विचार करू। गामक लोक आ गामक सम्पैतमे केना सम्बन्ध स्थापित हएत?

कर्मदेव- हम सभ तँ नवतुरिया छी, नीक-नहाँति नहियेँ बुझै छी तँए कनी अपने रस्ता बता दियौ?

नसीवलाल- अखन इतिहास-भूगोल देखैक काज नै अछि। अखन एतबे विचार करब अछि जे गाममे जेतेक जमीन अछि आ जेतेक लोक छी, पहिने ओकर हिसाब बुझि ली। बारहअना जमीन हुनकर छिऐन जे खेती छोड़ि अनतए जा नोकरी करै छैथ। चारिअना जमीन गाममे

रहनिहारकेँ छैन। हुनके सबहक जमीन लोक बटाइ कऽ कऽ कोनो धरानी जीब रहल छैथ। तँए जरूरी अछि ऐ खाधिकेँ भरब। जाबे से नहि हएत ताबे समस्या बनले रहल।

(नसीवलाल बैस जाइत।)

(कर्मदेव ठाढ़ भऽ कऽ।)

कर्मदेव- बेरा-बेरी अपन-अपन विचार रखै जाइ जाउ?

(ठाढ़ होइत)

सोमन- कहैले हमहूँ किसाने छी, मुदा ने अपना खेत अछि आ ने हर-बरद। जनेपर हरो कीनै छी आ अनके खेतमे खेतियो करै छी। जेना-तेना जिनगीकेँ घिसियबैत चलि रहल छी। आगू-पाछूक बात सेहो नहियेँ बुझै छी, तँए अपने लोकैन जे विचार करब, ओइसँ बाहर हमहूँ नै रहब।

(सोमन बैस जाइत। आभा उठि कऽ ठाढ़ होइत...।)

आभा- (जोरसँ...।) जँ देश अपन छी तँ देशक सम्पैत सेहो अपन छी। जरूरत अछि सबहक सुख-दुखमे सबहक भागीदारीक। जे गाममे रहि खेत जोतै छैथ, गामक खेत हुनका जिम्मा हेबा चाही। जँ से नहि हएत तँ जहिना मार-काटसँ इतिहास भरल अछि तहिना नव पन्ना आरो जोड़ाएत?

शान्ती- आभा बहिनक बात कटैबला नहियेँ छैन, किएक तँ साले-साल पनरह अगस्तकेँ हमहूँ सभ स्वराजक झण्डा फहराबै छी। मुदा की स्वराज अछि? समाजक सदस्यक

संग सरकारक अंग सेहो छी, तँए शान्तीसँ सभ काज करैत चलू। नसीवलाल काका आ सुकदेव काका जहिना उमेरगर छैथ तहिना अनुभवी सेहो छथिए, तँए जेना-जे विचार दैथ, हम सभ ओ करी।

सुकदेव- जेहने नवकवरिया आभा छैथ, तेहने शान्ती। मुदा दुनूक विचार सुनि हृदए शान्त भऽ गेल। खुशीसँ मन भरि गेल। सबहक विचारसँ एकटा रस्ता तँइ हुअए। जेकरा मानि सभ आगू बढ़ी।

नसीवलाल- ओना, दौग-बड़हा करैबला उमेर तँ नहियेँ अछि मुदा मेहौता बरद जकाँ संग-संग बहैले हम तैयारे छी। अरवन गाममे पढ़ल-लिखल नौजवान कर्मदेव अछि। चाहब जे दौग-धूप करैक भार कर्मदेवेकेँ देल जाए।

कर्मदेव- जँ समाज भार देता तँ जहाँ धरि सकब इमानदारीसँ सम्हारब।

नसीवलाल- जेते नोकरिया छैथ हुनकासँ सम्पर्क कऽ सभ बात कहियौन। समाजक निर्माण सभ मिलि करब, सर्वोत्तम।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 778

छठम दृश्य

(कृष्णदेवक डेरा। सूर्यास्तक समय। पनरह बर्खक बेटा- दिनेश आ तेरह बर्खक बेटी- सुधा, दरबज्जापर बैस परीक्षाक गप-सप्प करैत... ।)

सुधा- भायजी, अहाँ सबहक परीक्षा तँ लगिचा गेल?

दिनेश- हँ, ऐगला महिना आठ तारीखसँ हएत।

सुधा- सुनै छी, ऐ बेर चोरि-तोरि नइ चलत?

दिनेश- चोरि बन्न भेनाइ ओते असान अछि जे नइ चलत। भलेँ सेन्टरपर नइ चलौ मुदा आरो जगह बन्न हएब असान अछि?

सुधा- (जिज्ञासासँ... ।) औरो ठाम होइ छइ!

दिनेश- होइ छै भेला जकाँ! खूब होइ छइ! जएह भोजैतनी सहए चटैतनी। जेकरे ऊपर चोरि रोकैक भार छै सएह सभ करैए। जेकरे फलाफल छी जे नीक विद्यार्थीक रिजल्ट अधला होइ छै आ अधला विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइ छइ।

सुधा- से एना किए होइ छइ?

(कृष्णदेवक प्रवेश... ।)

दिनेश- हम तँ सभ बात बुझबो ने करै छी पापाकेँ सभ बुझल हेतैन।

सुधा- पापा, परीक्षामे चोरि केतए-केतए होइ छइ?

कृष्णदेव- बुच्ची! ओना, पुछलह तँ कहबे करबह। मुदा अधला गप सुनैमे समय नहियेँ लगाबी, सएह नीक।

सुधा- जँ अधला गप नै सुनब तँ फेर नीक-अधला बुझबै केना?

कृष्णदेव- (मुस्कियाइत) कहलह तँ ठीके। देखहक, ओना लोक परीक्षा केन्द्रपर जे किताब आकि चिट-पुरजी लऽ कऽ लिखैए तेतबे बुझै छइ। मुदा ऐ सभसँ नमहर-नमहर चोरि दोसर होइए। जखन कॉपी एकत्रिक भऽ परीक्षक ओइठाम पठौल जाइ छै तखन कॉपी अदैल-बदैल लेल जाइए।

सुधा- नइ बुझलिऐ, कनी नीक जकाँ फरिछा कऽ कहियौ।

कृष्णदेव- परीक्षा भवनसँ बाहर कॉपी लिखाइत अछि आ जमा करैकाल बदैल लेल जाइत अछि।

सुधा- (आश्चर्यसँ...।) तखन तँ ओकरा बहुत नम्बर अबैत हेतइ?

कृष्णदेव- अबिते छइ। कोनो कि एतबे होइए। एकर उपरान्तो जैठाम कॉपी जमा होइए आ मार्क-सीट तैयार होइए असली करामात तैठाम होइए। ओतए बनियाँक कारोबार जकाँ रुपैआक बरखा होइए।

सुधा- तखन तँ रुपैयेबला विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइत हेतइ?

कृष्णदवे- होइते अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश... ।)

कर्मदेव- गोड़ लगै छी काका।

कृष्णदेव- नीके रहह! गाम-घरक की हाल-चाल छह?

(भीतरसँ कृष्णदेवक पत्नीक अवाज अबैत अछि।)

गौंआँ-घरूआ दुआरे रहब कठिन भऽ गेल! केकरो असपतालक काज हौउ आकि कोट-कचहरीक, दौगल चलि आएत। जेना सबहक तोड़ा एतै गाड़ल होइ..!

(कान घुमा कर्मदेव सुनि ग्लानिसँ भरि गेल। मुदा समाजक प्रतिनिधि बुझि सभ सहैले तैयार... ।)

कर्मदेव- काका, आइ धरि एहेन रौदी नै देखने छेलौं। ओना उमेरे केते अछि मुदा जहियासँ गियान-परान भेल तहियासँ एहेन समयसँ भेँट नै भेल छेलए।

कृष्णदेव- (सुधासँ... ।) बुच्ची कर्मदेव भाय एलखुन। चाह नेने आबह।

(दुनू भाए-बहिन जाइत अछि... ।)

कर्मदेव- अपना दिसक की हाल-चाल अछि?

कृष्णदेव- नीक नहियेँ कहक चाही। तखन तँ कबुलाक छागर बनल छी। करवनोकाल सोचए लगै छी तँ लाज हुअ लगैए जे एते दरमाहा पाबियो कऽ पैंच-उधार करए पड़ैए..!

कर्मदेव- किए?

कृष्णदेव- छह-छह मासक दरमाहा पछुआ जाइए। मुदा घरक

खरच तँ हेबे करैए। एते दिन मकानक पाछू तबाह छेलौं मुदा पैछला महिना निवृत्ति भेलौं।

कर्मदेव- बड़का चिन्ता पार केलौं।

कृष्णदेव- की पार केलौं। आगू दिस तकै छी तँ ओहूसँ नमहर - नमहर चिन्ता घेरने अछि।

कर्मदेव- से की?

कृष्णदेव- दू बर्खक बाद बेटाकेँ मेडि कलमे नाओं लिखाएब तैपर सँ बेटी सेहो बिआहे-जोकर भाइये जाएत।

कर्मदेव- हँ, से तँ हेबे करत।

कृष्णदेव- पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आब हल्लुक रहल। लाखक तँ कोनो मोजरे ने अछि। अपन कमाइ हजारमे अछि आ खरच लाखमे, तखन चिन्ता किए ने पछुऔत!

कर्मदेव- अहाँकेँ कोनो की कमाइयेटा अछि, गामोमे तेतेक अछि जे..?

कृष्णदेव- सएह कखनोकाल सोचै छी जे गामक खेत बेच बैंकेमे रखि ली। जइसँ मौका-कुमौका काजो करब आ सूदि सेहो हएत।

कर्मदेव- (आँखि गड़ा कृष्णदेवकेँ देखैत...।) काका, परिवार माया-जाल छिऐ। जे गरीब अछि ओकरा छोटका माया पकड़ै छै आ जे जेते नमहर छैथ हुनका ओते नमहर पकड़ै छैन।

कृष्णदेव- ठीके कहै छह। राजा दुखी परजा दुखी जोगीकेँ दुख दूना। अपने बात कहै छिअ, गाममे केते खेत अछि से

देखिते छहक। जँ समय सुभ्यस्त रहल तँ सालो भरिक बुतातो तँ भाइए जाइए ऊपरसँ किछु बेचियो-बिकिन लइ छी, मुदा ऐ बेर सेहो नै हएत।

कर्मदेव- अहाँ सभ पढ़ल-लिखल छी, तखन..?

कृष्णदेव- (मुस्कियाइत...।) ब्रह्मफाँसमे पड़ि गेल छी। जहिना बाबाकेँ तहिना बाबूकेँ चौगामाक लोक 'मालिक' कहै छेलैन, मलिकाना निमाहितो छला। हमरो लोक तहिना बुझै छैथ। मुदा ब्रह्मफाँस केहेन लागल अछि जे ओ मान-प्रतिष्ठा सम्पैतमे सन्हिया गेल अछि! जँ एको धूर बेचब तँ सोझहे प्रतिष्ठा प्रभावित हएत..!

कर्मदेव- खाएर छोड़ू खिस्सा-पिहानी, अपनेसँ भेँट करैले समाज पठौलैन अछि।

कृष्णदेव- (अकचकाइत।) समाज पठौलखुन हेन! की बात? बाजह?

कर्मदेव- ऐ दुआरे पठौलैन हेन जे गाममे खेत-पथारबला तँ अहीं सभ छिऐ, तँए सभ कियो एकठाम बैस गामक कल्याणक विचार करी। बेर-बेर रौदी-दाही भऽ जाइए तेकर कोनो स्थायी समाधानक विचार करी।

कृष्णदेव- बहरबैया सभ रहता?

कर्मदेव- ओहीक जानकारी दइले पठौलैन हेन। अहीं-लगसँ काज शुरू केलौं हेन। एतए-सँ घनश्याम काका ऐठाम होइत रघुनाथ कक्काक घरपर जाएब। हुनका ओइठामसँ मनमोहन काकाकेँ भेँट करैत गाम जाएब।

कृष्णदेव- अखन घनश्यामक दिन-दुनियाँ दोसर भऽ गेलैन अछि। एक तँ जमीन-जत्थाबला लोक पहिनहिसँ रहला, तैपर सँ बैंकक नोकरी..!

कर्मदेव- हुनकर सोभावो किछु आने ढंगक छैन।

कृष्णदेव- सोलहन्नी बनियाँक चालि पकड़ने छैथ। खाएर, जुगो-जमाना तँ हुनके सबहक छिऐ।

कर्मदेव- आठम दिन, रबि दिन बैसार छी। से अपने समयपर पहुँच जाइऐ।

कृष्णदेव- बड़बढ़ियाँ। परसू तक तँ तोहूँ घुमि जेबह?

कर्मदेव- हँ-हँ, जेते जल्दी भऽ सकत ओते जल्दी घुमैक कोशीश करब।

कृष्णदेव- चारिम दिन हमहूँ फोनपर सभसँ सम्पर्क करब। एहेन नहि जे एक गोरे पहुँचैथ आ दोसर पहुँचबे ने करैथ।

कर्मदेव- नहि-नहि, सभ औता। सभ कियो विचारि लेब। आखिर समाजक तँ अहींसभ बुझनुक भेलिऐ।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 836

सातम दृश्य

(घनश्यामक घर। एजेन्ट शिव शंकरक संग... ।)

शिव शंकर- मैनेजर साहैब, हमर कम्पनीक इतिहास साए बर्खक अछि। वस्तुक गुणवत्ता आ वेपारिक साख एहेन अछि जेकर बाँहि पकड़ैबला दुनियाँमे एकोटा कम्पनी नइ अछि। जेहेन बोरिंगक पाइप आ दमकल हम देब ओ दोसर कियो नहि दऽ सकैए।

घनश्याम- बैंक की कोनो अप्पन छी। अपने मात्र एक ब्रांचक मनेजर छी। ओहो जाबे काज करै छी तेतबे काल। सरकारक नजैर कनी गामक खेत दिस उठल तँए ई अवसर आएल। तइ अवसरसँ..?

शिव शंकर- हँ, हँ। हमहूँ कहाँ चाहै छी जे अवसरक लाभ ने हुअए।

घनश्याम- परसूए एक गोरे–दोसर कम्पनीक एजेन्ट–आएल रहैथ ओ पाँच प्रतिशत कमीशनक बात केने छला। ओना, अखन धरि हमरो स्पष्ट आदेश ऊपरसँ नहियेँ आएल अछि। मुदा पैछला मिटिंगमे बाजाप्ता चर्चा भेल रहए। यएह बात हुनको कहि पनरह दिनक बाद भेँट करैले कहलयैन हेन।

शिव शंकर- अहाँ, भलेँ ओइ कम्पनीक बात नीक जकाँ नै बुझैत होइऐ मुदा हम तँ रत्ती-बत्तीक बात बुझै छी। केहेन घटिया माल बना-बना सप्लाइ करैए, से दोसर-दोसर बैंकसँ पता लगा लेब। हमर पाइप जँ ओकरा पाइपपर पटैक देतै तँ थौआ-थाकर कऽ देतइ। अहूँ तँ जनिते छी जे नीक वस्तुक उत्पादनमे नीक खरचो बैसै छइ।

घनश्याम- खरचा बेसी बैसै छै तँ दामो बेसी होइ छै किने!

शिव शंकर- हँ, से तँ होइते छइ। मुदा घटिया माल केते दिन चलत सेहो ने देखबै।

घनश्याम- से तँ बेस कहलौं, मुदा जे आदेश हएत सएह ने करब।

शिव शंकर- ऐठामक सक्षम किसानक रिपोट देबै तँ किए घटिया मालक आदेश हएत? जैठाम पछुआएल किसान अछि, पहिले-पहिल बोरिंग देखत, ओ कियॉने गेल नीक-अधला।

घनश्याम- हँ, से तँ मानलौं। मुदा सोल्होअना नेत बिगाड़ियो लेब सेहो तँ नहि।

शिव शंकर- (बात लपैक...।) हँ, यएह विचार हमरो कम्पनीक अछि। जे औनर छैथ हुनकामे ई भावना कूट-कूट कऽ भरल छैन। मुदा बीचमे जे घटिया कारोबारी सभ अछि वएह सभ ने नीको मालक बजारकेँ घेर घटिया बजार बना दइए। दू-पाइ बेसियो लगने जँ उपभोक्ताकेँ नीक वस्तु भेटै छै तँ ओकर उपयोगो बेसी दिन करैए।

घनश्याम- मानलौं जे अहाँक समान तेज अछि मुदा सभकेँ ने

अपन-अपन कारोबार अछि। पद आ प्रतिष्ठाक लोभ केकरा नै छइ। जे ब्रांच जेते लाभ बैंककेँ देखौत, ओते ने ओइ स्टापकेँ आगू बढ़ैक अवसर भेटतै।

शिव शंकर- हँ, से तँ मानै छी। मुदा हमर ओहन कम्पनी अछि जे देशे नहि, विदेशोमे सप्लाइ करैए। दू-साल बितैत-बितैत घटिया कम्पनी सभकेँ बजारसँ भगा दैत अछि। भलेँ नव बजार ठाढ़ भेने शुरूमे किछु कमा लिअए मुदा केते दिन..?

घनश्याम- खाएर छोड़ू ओइ सभकेँ। मोट गाछक मोट मुसरो होइ छइ। मुदा जहिना अहाँ तहिना हम। अपना दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध केना बनत तैपर विचार करू।

शिव शंकर- (ठहाका मारि... ।) आब रस्ताक बात भेल ने। अखन ने अहाँ सोचै छी जे एक्के भागक आमदनी अछि मुदा से नहि, दुनू भाग अछि।

घनश्याम- से केना?

शिव शंकर- हमहूँ गामेसँ आएल छी। पिताजी कर्मचारी छला। जखन लगमे बैसै छेलिऐन तखन जमीन-जत्थाक खेरहा कहै छला।

घनश्याम- (मुस्की दैत... ।) की कहै छला?

शिव शंकर- (हँसैत... ।) कहै छला जे जखन जमीन्दारीक चार्ज सरकार लेलक तखन हमरा सभकेँ अगहन आबि गेल। खेत-खरिहाँनसँ लऽ कऽ आँगन-सँ-कोठी धरि धाने-धान..!

घनश्याम- नइ बुझलौं?

शिव शंकर- गाममे केते किसान छैथ जिनका जमीनक सही-सलामत सबूत छैन। एक तँ पहिनहिसँ जाल-फरेबी, तैपरसँ बाढ़ि आबि-आबि घर-दुआरक संग कागजो पत्तर ने लऽ जाइ छेलइ।

घनश्याम- (मुस्कियाइत... ।) हँ, से तँ ठीके।

शिव शंकर- सरकारक सुविधा तँ बैंकेक माध्यमसँ ने हएत। असल कार्यालय तँ बैंक हएत। जे किछु किसानकेँ भेटत, ओइले तँ बैंकेमे ने बौण्ड बनबए पड़तै। बौण्ड-ले तँ ताजा सबूत माने जमीनक करेन्ट रसीद चाही। ई तँ अहीं हाथक भेल।

घनश्याम- (हँसैत... ।) एक प्रतिशत कम कऽ देब।

शिव शंकर- बड़बढ़ियाँ। कारोबारक गप भाइये गेल। चलै छी।

घनश्याम- ओहिना जेनाइ उचित हएत। हम सभ मिथिलांचलक ने छी। अतिथिकेँ देवता बुझै छी, तँए किछु रस-पानि केने बिना..?

शिव शंकर- आब की ओ जुग रहल जे सुरा-सुन्दरीसँ अतिथिक सेवा होइ छल। हम सभ तँ तेहेन जुगमे आबि गेलौं जे ने खाइक ठेकान आ ने आराम करैक ठेकान रहल।

घनश्याम- (नोकरकेँ सोर पाड़ि... ।) बहादुर, बहादुर ?

(पहाड़ी नोकरक प्रवेश... ।)

(आँखिक इशारा घनश्याम देलखिन।)

(भीतर जा दूटा गिलास आ समतोला रंगक शीशी नेने आबि टेबुलपर रखि चलि जाइत। शीशी खोलि दुनू गिलासमे लऽ दुनू गोरे पीलैन... ।)

शिव शंकर- आब आदेश होइ।

(शिव शंकर उठि कऽ ठाढ़ होइत। घनश्यामो ठाढ़ होइत तखने कर्मदेवक प्रवेश। अबिते कर्मदेव पएर छुबैत... ।)

घनश्याम- बौआ, हिनका विदा कऽ दइ छिऐन। निचेनसँ गप-सप्प करब।

कर्मदेव- हँ, हँ, काका। हमहूँ किछु विचारे करए एलौं हेन।

(हाथमे हाथ मिला घनश्याम सड़क तक जाइ छैथ। घुमि कऽ आबि... ।)

घनश्याम- आब कहह बौआ, गाम घरक हाल-चाल। मुदा पहिने कपड़ा खोलि फ्रेश भऽ चाह पीब लएह, तखन निचेनसँ गप-सप्प हेतइ।

(चाह अबैत। कर्मदेवक हाथमे कप धड़बैत घनश्याम अपन चाह आपस करैत... ।)

कर्मदेव- अहाँ किए चाह घुमा देलिऐ?

घनश्याम- देखबे केलहक। चाह पीबैत-पीबैत पेट भरिया गेल अछि।

(खाली शीशी आ गिलास देख... ।)

कर्मदेव- (मुस्की दैत।) काका, की कुशल गामक रहत। एक तँ ओहिना सभ तरहेँ खाधिमे खसल छीहे, तैपर सँ तेहेन

रौदी भऽ गेल जे परान बँचब लोकक कठिन भऽ गेल अछि।

घनश्याम- जे बात कहलह ओ नान्हिटा नै अछि। मुदा बिना केनौं तँ नहियेँ कल्याण हएत। भने छुट्टीक दिन रहने मनो हल्लुक अछि। मुदा तैयो एक दिनमे सभ बात कहलो नहि जा सकैए। ओना तूँ पढ़ल-लिखल नवयुवक छह तँए कम्मो कहने बेसी बुझबहक।

कर्मदेव- अहाँ सभकेँ बेवहारिक ज्ञान अछि, काका। हम तँ हालेमे कौलेज छोड़लौं हेन। गाम-ले तँ सोल्होअना अनाड़ीए छी।

घनश्याम- गाम तँ तेहेन भऽ गेल अछि जे दू-चारि गोरे एकठाम बैस अपन सुखो-दुखक निवारणक गप करब, सेहो ने अछि। सभ अपने ताले बेताल अछि। कियो अपनाकेँ कम बुझैले तैयारे ने अछि। सबहक मन घेराएल छै जे हमरासँ बुधियार दोसर कियो ने अछि।

कर्मदेव- एना किए अछि?

घनश्याम- अखन धरिक जे बेवस्था रहल ओ संस्कारे बिगाड़ि देने अछि। मुदा अखन ऐ बातकेँ छोड़ह। अखन जे दुरकाल उपस्थित भऽ गेल अछि ओइपर गप करह।

कर्मदेव- हँ, सएह बढ़ियाँ।

घनश्याम- अखन दुइए गोरे छी। तहूमे भने डेरेमे छी तँए अखन दुइए परिवारक गप करह। देखिते छह जे गाममे सभसँ बेसी खेत अछि। बाबाकेँ अपन अमलदारीमे एकटा

मुनहर आ तीनटा बखारीक संग हाथी सेहो छेलैन। तखन नोकरी करैक जरूरत हमरा किए भेल?

कर्मदेव- (किछु सोचैत...।) किए भेल?

घनश्याम- यएह सोचै आ बुझैक बात अछि। हमरा सम्पैत छेलए घरसँ बाहर जा पढ़लौं। मुदा जेकरा खैयोक उपा ए नइ छै ओकर बाल-बच्चा स्कूल आँखि देखत? खिस्सा तँ सभ कहतह जे बहिन रहितो लक्ष्मी-सरस्वतीक बास एकठाम नहि होइ छैन।

कर्मदेव- (जिज्ञासा करैत...।) छातीपर हाथ रखि कहै छी जे ने अपने मनमे अखन धरि ई बात उठल आ ने कियो कहलैन।

घनश्याम- ई तँ सिरिफ पढ़ै-लिखैक बात कहलियह। पढ़नाइ-लिखनाइसँ जरूरी अछि खेनाइ, रहनाइ आ बर-बिमारीसँ बँचैक उपाय। आँखि उठा अपने देखह जे की अछि?

कर्मदेव- (आँखि उठा ऊपर-निच्चाँ देख...।) ठीके कहै छी काका। मुदा हएत केना! अहाँ सभ सन बुझनिहार गामे छोड़ि देने छी तखन अबूझ केना सबूझ बनत। जाधैर बुझबे ने करत ताधैर आगू डेग केना उठौत?

घनश्याम- यएह बात बुझैक जरूरत अछि।

कर्मदेव- जाधैर बुझत नहि ताधैर ओहिना पाछू मुहेँ गुड़कैत जाएत।

घनश्याम- (दुनू हाथसँ दुनू आँखि मलैत...।) बौआ, सच पुछह तँ

अपना-सभ स्वतंत्र देशक गुलाम छी। किसानक देश पूजीपतिसँ हारि गेल छी। भलेँ एकरा पछुआएब कहि अपन प्रतिष्ठा बँचा ली, मुदा छी शासनसँ बाहर!

कर्मदेव- सेरिया कऽ कहियौ काका, नीक नहाँति नै बुझलौं।

घनश्याम- सत बात बजैमे कनियोँ धरी-धोखा नै होइए। जइ परिवारक सम्पैतसँ चालिस-पचास परिवार चलै छल तइ परिवारकेँ नोकरी करए पड़इ, केते लाजिमी अछि? मुदा..!

कर्मदेव- काका, अहाँ लगसँ जाइक मन नै होइए। मुदा काजक भार बैसै ने दिअ चाहैए। किएक तँ एक निसचित सीमामे काजक सम्पादन नहि भेने काज गड़बड़ाइये जाएत। अखन समाजक काजमे बन्हाएल छी। निचेनमे दोसर दिन औरो बुझब।

घनश्याम- हँ, से तँ ठीके कहै छह। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे एकटा संगी भेटल जे पेटक बात पेटमे लिअ चाहैए। कोन चीजक कमी अछि।

कर्मदेव- से तँ नहियेँ अछि।

घनश्याम- ओना लोकक बुधि, बिपैतक मारिसँ घटैत-घटैत एते घटि गेल अछि जे समैयक संग पकड़िये ने पबैत अछि। खाएर छोड़ह। काजक बात कहह?

कर्मदेव- गामक दशा बद-सँ-बदतर भऽ गेल अछि। माल-जाल उपैट रहल अछि। लोक भागि रहल अछि। चलन्त सम्पैत पाछू मुहेँ ससैर रहल अछि। यएह सभ देखि

समाज विचार केलैन जे ऐगला रविकेँ सभ मिलि बैसार करी जइमे गामक कल्याणक बाट ताकी।

घनश्याम- (अध हँसी हँसि...।) हृदए गामक संग अछि। तँए जेते सम्भव हएत ओते समाजक सहयोग करब।

कर्मदेव- जखने अहाँ सभ तैयार हेबै तखने समाजक कल्याण निसचित हएत। आब जाइ छी।

घनश्याम- तोरा जइ चीजक जरूरत हुअ, आन नै बुझिहह। बड़बढ़ियाँ जाह।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1375

आठम दृश्य

(इंजीनियर मनमोहनक डेरा। दोसर साँझ। मनमोहन आ सन्तोष गप-सप्प करैत... ।)

मनमोहन- बाउ, पहिल ज्वानिंग छिअ तँए पहिने घोंसिया जाह। पछाइत बदलीक जोगार लगा देबह।

सन्तोष- बाबू, भलेँ अहाँ सभ दिन शहरमे रहलौं मुदा गाम गाम छी।

मनमोहन- से की?

सन्तोष- डेरासँ ऑफिस आ ऑफिससँ डेरा करैत रहलौं, ऑफिसमे बैस घर-सँ-सड़क धरिक नक्शा कागतपर बनबैत रहलौं जइसँ काजक दायरा सिकुरि गेल। मुदा हम तँ चारि बर्खमे माटिये-पानिक गुण-अवगुन बुझलौं। अपार धन माटि-पानिमे छिपल अछि।

मनमोहन- से केना?

सन्तोष- अपना ऐठामक जे माटि-पानि आ मौसम अछि ओ दुनियाँमे केतौ ने अछि। नान्हि टा देश जापान जे एशिये

महादेशमे अछि देखियौ ओकरा।

मनमोहन- की अछि, केहेन अछि?

सन्तोष- ओना ओकर आन बात तँ नै पढ़लौं हेन। मुदा ओकर भौगौलिक बनाबट आ उन्नति जरूर पढ़लौं हेन। अ पना देशक (पहिलुका एक राज्य) दूटा राज्यक बरबैर ओकर लम्बाइयो-चौड़ाइ छै आ जनसंख्यो छै, मुदा दुनियाँक अगुआएल देशक पाँतिमे अछि।

मनमोहन- एतबे टा अछि?

सन्तोष- एतबेटा किए कहै छिऐ। ओहूमे दुनियाँक सभ देशसँ बेसी भुमकमो होइ छइ।

मनमोहन- भुमकम किए होइ छइ?

सन्तोष- ओइठाम ज्वालामुखी बेसी अछि। खाएर ऐ बातकेँ छोड़ू। छोट देश आ कम आबादी रहितो ओ ओते अगुआ किए गेल अछि।

मनमोहन- किए अगुआएल अछि?

सन्तोष- जहिना ओकर खेती अगुआएल छै, तहिना कल-कारखाना। दुनियाँक बाजारमे ओ माल पटने अछि। तहिना खेतियोक छइ। जेते उपज–रकबा हिसाबे–ओकरा होइ छै ओते केकरा होइ छइ।

मनमोहन- केना एते उन्नत खेती केलक?

सन्तोष- ओइसँ बेसी अपनो सभ कऽ सकै छी। मुदा ऐठाम सभसँ पैघ कारण अछि जे साठि बर्ख अजादीक उपरान्तो ऐठामक लोक गुलामीक जिनगी जीब रहल

अछि। स्वतंत्र नागरिकक संस्कार आ गुलामीक संस्कारमे अकास-पतालक अन्तर होइ छइ। ओना अपनो देश उद्योग-धन्धामे जेते अगुआएल अछि ओते खेती-पथारीमे नहि अगुआएल। जे भारी खाधि दुनूक बीच बनल अछि।

मनमोहन- एहेन बात छइ?

सन्तोष- अपने बात लिअ। अखनो गाममे खेतबला परिवार अपन अछि। मुदा खेती करै छी? नहि। सभटा बटाइ लगौने छी। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे ने ओकरा खेत जोतैक उचित साधन छै आ ने खेती करैक आन साधन। सोल्होअना मौनसूनपर निर्भर रहैत अछि। एक तँ साधन नहि, दोसर करैक ऊहि सेहो ओहन नइ छै, जइसँ दुनियाँक खेतीक बरबैरेमे औत।

मनमोहन- ओते मत्था-पच्ची करैक कोन जरूरी छह। खाइत-पीबैत रामलला। जहुना जिनगी चलै छह तहुना जे निमाहि लेबह ओहो कम भेल।

सन्तोष- नहि बाबू, जिनगीक सार्थकता होइत अछि अपनासँ आगू बढ़ि करैमे। सरकारोक आँखि गाम दिस उठल हेन तँए ओकर उपयोग हेबा चाही। जहिना बाबाक अमलदारीमे बखारीक शोभा छल तहिना फेर हएत।

मनमोहन- अखन जेते असानीसँ शहरक लोक जीबैत अछि ओते गाममे थोड़े हेतह?

सन्तोष- ओइसँ बेसी हएत। हँ, अखन नै अछि। मुदा केना हएत

ई तँ गामेक लोककेँ सोचए पड़तै किने। अपने बात लिअ, हजार-बजारक नोकरी खुसीसँ करै छी मुदा ई बुझै छिऐ जे जँ अपन खेतकेँ समुचित सुविधा बना कएल जाएत तँ करोड़ोक आमदनी हएत?

मनमोहन- हमरो नोकरी लगिचाएले अछि, संगे शरीरो एते भरिया गेल अछि जे किछु करै-जोकर नहि रहलौं। एहेन स्थितिमे केना जीब?

सन्तोष- केना की जीब? जहिना गाम छोड़ि नोकरी करए शहर एलौं तहिना शहर छोड़ि गाम चलब। हमहूँ ओतबे दिन नोकरी करब जाबे तक अपन समुचित खेतीक रूप नै पकैड़ लेत। अहाँ नै देखै छिऐ जे पँच-पँच-सत-सत साए रुपैए किलो अन्नक बीआ आन-आन देशबला बेचैए। कनी गौर कऽ कऽ देखियौ जे किलो भरि अन्नक दाम केते अछि।

मनमोहन- हँ, से तँ सुनै छी।

सन्तोष- की हम अपने ओहन बीआ तैयार नै कऽ सकै छी? जरूर कऽ सकै छी। तहिना नीक बना पशुपालन, नीक किस्म बना माछक पालन आ औरो केते कहब। खाली हाथसँ करैक हिम्मत आ माथसँ सोचैक शक्तिक जरूरत अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश...।)

मनमोहन- आ-हा-हा, बाउ कर्मदेव?

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि...।) प्रणाम, चाचाजी।

मनमोहन- बाउ सन्तोष, लोटामे पानि नेने आबह। बाटक झमाड़ल

छैथ। पछाइत चाह-पान चलतै।

(सन्तोष भीतर जाइत अछि आ लोटामे पानि आनि, कर्मदेवक आगूमे ठाढ़ भऽ... ।)

सन्तोष- पहिने पएर धोउ?

कर्मदेव- अच्छा पछाइत धो लेब। कोनो कि पएरे चललौं हेन। सड़कपर सवारीसँ उतरलौं हेन।

मनमोहन- चाह नेने आबह। (सन्तोष भीतर जाइत अछि... ।) आकि पहिने किछु खेबह?

कर्मदेव- नहि, अखन किछु ने खाएब। मन गदगरल अछि। चाह पीब लेब।

(दू कप चाह नेने सन्तोष अबैत अछि... ।)

मनमोहन- (चाहक चुस्की लैत... ।) आब कहह गामक हाल-चाल?

कर्मदेव- गामक हाल-चाल की कहब चच्चाजी। नरकंकाल जकाँ गामक हाड़ झक-झक करैए।

(कर्मदेवक बात सुनि मनमोहन निरुत्तर होइत मुँहपर हाथ लऽ मुड़ी झूका कऽ सोचए लगै छैथ। बीचमे ठाढ़ सन्तोष कखनो पिता दिस देखैए तँ कखनो कर्मदेव दिस। मुदा किछु बजैत नहि। दुनू गोरेकेँ चुप देख... ।)

सन्तोष- बाबूजी, हम जेठ छी कि कर्मदेव?

मनमोहन- कर्मदेवक तँ नहि बुझल अछि मुदा तोहर एक्कैसम लगिचाएल छह।

कर्मदेव- हमरो एक्कैसम चलि रहल अछि।

मनमोहन- तखन तँ किछुए मासक कम-बेसी हेतह। एक बतरीए भेलह।

कर्मदेव- चाचाजी, जौंआँ बच्चाक अन्तर पाँचे-दस मिनट होइ छै मुदा ओहूमे जेठाइ-छोटाइ होइ छइ?

मनमोहन- हँ, से तँ होइते छै, मुदा ई तँ सर्टिफिकेटसँ फरियेतह।

कर्मदेव- ओहूसँ नीक जकाँ नहियेँ फरियाएत? किएक तँ अहाँ घरमे भलेँ जन्म-टिप्पणि हुअए मुदा हमरा घरमे नहियेँ अछि। टिप्पणि देखि स्कूलमे नाओं लिखौने होइ, मुदा हमर तँ अनठेकानी लिखाएल अछि।

मनमोहन- भैयारी बनब पेंचगर छह। दुनू गोरे दोस्ती कऽ लएह। सन्तोषोक विचार गामेमे रहैक छै आ तहूँ गामेमे रहै छह।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...।) चाचाजी, अहाँ तँ अमृत फल खुआ देलौं। मित्र तँ नरकोसँ उद्धार करैत अछि।

(तीनू गोरे ठहाका दिअ लगै छैथ।)

हम केमहर एलौं से तँ पुछबे ने केलौं ?

मनमोहन- गामसँ हटि भलेँ रहै छी तँए कि समाजक सभ किछु छोड़ि देलौं। दुआरपर आएल अतिथिकेँ पुछल जाइ छै जे केमहर एलौं! अतिथियेक सेवा तँ धर्मखातामे लिखाइत अछि।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...।) अपने कहै छी। अखन धड़फड़ाएल छी तँए बेसी गप-सप्पमे समय नहि दऽ सकब। जेतेक समय गमाएब तेतेक काज पछुआएत।

(मनमोहन आ सन्तोषो सुनैक इच्छासँ कर्मदेव दिस ताकए लगैत... ।)

रवि दिन समाजक बैसार छी, सएह कहए एलौं।

मनमोहन- कनी फरिछा कऽ बाजह!

कर्मदेव- गामक मूलपूजी पूजी खेत छी। खेतेक उपजापर गामक लोक ठाढ़ भऽ जिनगी चलबैत अछि। मुदा समाज तँ बनि गेल मुदा सामाजिक पूजी नै बनि सकल, जइसँ एते भारी खाधि दुनूक बीच बनि गेल जे अछैते पूजीए लोक पूजी विहिन भऽ गेल अछि! अही सबहक विचार लेल बैसार भऽ रहल अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत... ।) उदेस तँ जबरदस अछि, मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की। ऐ धरतीपर सभसँ अगुआएल मनुख अछि, तखन?

सन्तोष- कर्मदेव भाय, अहूँ हालेमे कौलेज छोड़लौं हेन आ हमहूँ हालेमे छोड़लौं अछि तँए बेवहारिक दौरमे दुनू गोरे अनाड़ीए छी। किएक तँ जइ गाममे रहै छी ओ जमीनक एक निसचित सीमाक अन्तर्गत निर्धारित अछि। जहिना जमीन तहिना बसल लोक। तँए... ।

कर्मदेव- 'तँए' की?

सन्तोष- जमीनकेँ जाल कहल जाइ छइ। जाल फँसबैक वस्तु छी। जहिना मछबार जाल फेक माँछ फँसबैत अछि, शिकारी शिकार फँसबैत, तहिना शिकारी सभ जमीनक जाल फेक जमीनकेँ फँसा नेने अछि, तँए..?

(आँखि गुड़ैर मनमोहन सन्तोषपर देने। तहिना कर्मदेव सेहो सन्तोषक आँखि-पर-आँखि अँटकौने।)

कर्मदेव- 'तँए' की?

सन्तोष- छोटका जालमे छोट माँछ आ छोट शिकार फँसैत अछि मुदा जेना-जेना जाल नमहर होइत तेना-तेना नमहर माछो आ शिकारो फँसैए। जखन कि महजालमे छोट-पैघ सभ फँसैए, तहिना अखन सम्पैतक दौड़मे विश्व-जाल पसरल अछि। नीक जकाँ हमरो नहि बुझल अछि। मुदा इशारा रूपमे ओइ दिन सुनलौं जइ दिन कौलेजक दिक्षान्त समारोहमे सर्टिफिकेट दऽ शिक्षक लोकैन विदा केलैन।

कर्मदेव- दीक्षाक अर्थ?

सन्तोष- सेहो ओही दिन बुझलौं। कान फूकि दीक्षा देनिहार जेरक-जेर घुमैत अछि। मुदा दीक्षाक अर्थ होइत अछि-प्राप्ति। अहाँ कौलेजसँ निकलैक सर्टिफिकेट नइ लेलौं हेन?

कर्मदेव- हँ, ऑफिससँ तँ जरूर भेटल मुदा दीक्षान्त समारोह कऽ कऽ नहि।

सन्तोष- किए?

कर्मदेव- नीक जकाँ तँ नै बुझल अछि मुदा दस-पनरह बर्खसँ कहाँ दीक्षान्त समारोह भेल हेन।

सन्तोष- साले-साल हेबा चाहीए।

कर्मदेव- भाय, भने अहूँ गामेमे रहि मोटर साइकिलसँ ऑफिसो करब आ गामोक काज देखब।

सन्तोष- बेसी समय गामेक काजमे लगाएब।

कर्मदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1333

नवम दृश्य

(डॉ. रघुनाथक घर। ओसारक कुरसीपर बैसल रघुनाथ माथपर हाथ दऽ आँखि मूनि सोचैत। चाह नेने पत्नी अनुराधा अबैत... ।)

अनुराधा- आँखि लगल अछि। चाह पीबू।

रघुनाथ- आँखि कथी लगत कपार। अनेरे आँखि बन्न भऽ रहल अछि।

अनुराधा- अपने डॉक्टर छी तखन..?

रघुनाथ- अपने डॉक्टर छी तेकर माने..?

अनुराधा- तखन किए रोग..?

रघुनाथ- रोगक सीमा-नाँगैर अछि। मनुखे जकाँ बिना सिंग - नाँगैरक जानवर जकाँ अछि। देहक रोगक डॉक्टर ने छी मनक रोगक थोड़े छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- कोनो कि देहेटा मे रोग होइए। मनोकेँ तँ देहे जकाँ ने सभ किछु छइ।

अनुराधा- तखन तँ औरो नीके किने। जहिना थर्मामीटरसँ बोखार परखल जाइ छै तहिना ने मनोक बोखार परखैक यंत्र

हेतै, ओइसँ नापि दबाइ खा लिअ।

रघुनाथ- विधाता ऐठाम जखन बुधिक बँटबारा हुअ लगल तखन सभकेँ चम्मछ लऽ लऽ देलखिन आ अहाँ-बेरमे बरतने उझैल देलैन।

अनुराधा- एना बताह जकाँ किए बजै छी! जखन मन गड़बर भऽ गेल तखन ओकर प्रतिकार करब किने। हमहूँ सहयोगी छी, सहयोग करब आकि सभकेँ भगा अपने पगलखन्नाक हरीमे ठोकाएब। मन थीर करू। चाह पीबू, सिगरेट नेने अबै छी।

(अनुराधा भीतर जाइत। रघुनाथ एक-एक चुस्की चाहो पीबैत आ कखनो अकास दिस तँ कखनो निच्चाँ दिस तकैत बड़बड़ेबो करैत... ।)

रघुनाथ- भुमकम भेलापर उनटनो होइए। जहिना अकासक गाछ-जमीनपर खसैए तहिना ने जमीनो अकास दिस चढ़ैए। मुदा पावस तँ अकासकेँ अमृतसँ सीचैत रहैए।

(रघुनाथकेँ बड़बड़ाइत देखि अनुराधा मुँहथैरपर ठाढ़ भऽ सुनए लगली... ।)

आ-हा-हा की सुन्दरता पावसोक होइए। करोड़ो-अरबो जीब जन्तुकेँ सृजनो करैए, अमृतेसँ स्नानो करबैए, पीबोयो-ले दइए आ दुनूक बीच–माने अकास-जमीनक–बीच बाट सेहो बनबैए।

अनुराधा- (मने-मन उदास भऽ... ।) भरिसक बुधिक बिमारी पकैड़ लेलकैन। (आगू बढ़ैत) लिअ सिगरेट-सलाइ नेने एलौं।

चाहो तँ नहियेँ पीलौं हेन!

रघुनाथ- हमरे नहि सुझैए आकि... । मन भरि गेल अहाँ कहै छी चाहो ने पीलौं।

(रघुनाथक मुँहक सुरखी उदास होइत जाइत... ।)

अनुराधा- मुँहक सुरखी बदैल रहल अछि?

रघुनाथ- लाउ, सिगरेट पीब तखन चुहचुही औत। की भकुआएल जकाँ बुझि पड़ै छी?

(सलाइ खड़ैर सिगरेट धरा कस खींच ऊपर मुहेँ धु आँ फेकैत... ।)

देखियौ धुँआ केना ऊपर मुहेँ जाइए।

अनुराधा- ओछाइन ओछा दइ छी, आराम करू।

रघुनाथ- कहलौं तँ विधाता बुधिक बरतने अहाँ-आगूमे उझैल देलैन। जागलमे जइ रोगकेँ भगौल नै हएत सुतलमे केना हएत?

अनुराधा- की सभ होइए?

रघुनाथ- बैसू, कहै छी। ब्रज कन्याँ तँ अहींटा छी तँए अपन दिलक-दुख अहाँकेँ नै कहब तँ दोसराकेँ कहने की हएत?

अनुराधा- (मुस्की दैत... ।) से की, से की?

रघुनाथ- अहाँ जे भकुआएल बुझै छी से ठीके बुझै छी। मुदा नीनक भक्क नहि, जिनगीक रस्ताक भक्क लगल अछि। केमहर जाएब से चौराहापर बुझिये ने पबै छी।

अनुराधा- बीचमे ठाढ़ भऽ कऽ देखियौ जे कोन बाटक दु भि (खढ़-पात) पैरक रगड़सँ उड़ि गेल छै आ कोन दुभियाह अछि।

रघुनाथ- कहलौं तँ बेस बात, मुदा भकुआएल मने देखबो करिऐ तखन ने। आन्हरे जकाँ सभ अन्हार बुझि पड़ैए।

(दुनू आँखि दुनू हाथसँ मलैत...।)

की सपना छल आ की देखि रहल छी...।

अनुराधा- से की? से की?

रघुनाथ- सभ किछु समाप्त भऽ रहल अछि, आकि जिनगीए समाप्त भऽ रहल अछि से बुझिये ने पाबि रहल छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- परसू रिटायर करब।

अनुराधा- सभ रिटायर करैत अछि आकि अहींटा करब!

रघुनाथ- खाली नोकरीए-टासँ नहि ने रिटायर करब। देहोक रोग किछु बढ़ि गेल अछि जइसँ रोगी सबहक शिकाइत आबि रहल अछि।

अनुराधा- से तँ आब उमेरो भेल किने?

रघुनाथ- उमेरक असर शरीरपर पड़ै छै आकि ब्रेनपर। आमक आठी जकाँ कोइलीसँ फकुआ बनत आकि फकुआसँ कोइली?

अनुराधा- तखन किए एना भेल?

रघुनाथ- ब्रेने छिड़िया गेल। एकरा केना समटब?

अनुराधा- आबो समटू।

रघुनाथ- छिड़ियाएल वौस बीछ-बीछि समटल जा सकैए। छिड़ियाएल मन केना समटल जाएत? पाछू उनैट तकै छी तँ केतौ गड़बड़ नइ देखै छी। मुदा आगू तकै छी तँ नोकरीक संग प्राइवेट कमाइयोकेँ जाइत देखै छी।

अनुराधा- से केना?

रघुनाथ- चढ़न्त छल तखन मकान बनेलौं, क्लीनिक बनेलौं। रेस्ट-हाउसक संग जाँच-पड़ताल करैक यंत्र कीनलौं। मुदा आइ की देखै छी?

अनुराधा- की नै देखै छी, कोन चीजक कमी अछि?

रघुनाथ- अपने मुइने जग मुअए। जैठाम रोगीक भीड़ लगल रहै छेलए तैठाम गोटि-पँगरा आबि रहल अछि। तहिना रेस्ट-हाउस ढन-ढन करैए। सप्ताहक-सप्ताह जाँच मशीन बैसले रहैए। अपनो दरमाहा अधियाइए जाएत। मुदा खर्च तँ..?

अनुराधा- एना किए भेल?

रघुनाथ- समय केते आगू बढ़ि गेल से नइ देखै छी। सभ चीज पुरान पड़ि गेल।

अनुराधा- ऐ सभ दिस नजैर पहिने नहि गेल छल?

रघुनाथ- नजैर केना जाइत। नजैर तँ शान्तचित्तमे टहलैत अछि। से कहियो कहाँ भेल। दिन-राति एकबट्ट कऽ काजमे लगल रहलौं। जिनगीक विषयमे सोचैक पलखतिये

कहिया भेल।

अनुराधा- चिन्तो केने तँ नहियेँ हएत।

रघुनाथ- से तँ नहियेँ हएत। मुदा अनहरिया राति जकाँ अन्हार तँ बढ़ले जाइए।

(कर्मदेवक प्रवेश... ।)

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि) गोड़ लगै छी चाचाजी। (अनुराधाक पएर छुबि) गोड़ लगै छी चाचीजी।

रघुनाथ- गाम-घरक हाल-चाल कहह?

कर्मदेव- गाम-घरक कथी हाल-चाल रहत। रद्दी कागत जकाँ गामोक दशा भऽ गेल अछि। पैछला साल तँ कनी-मनी नीको छल जे ऐ बेरक रौदी तँ उजारि देलक।

रघुनाथ- बौआ, अपनो दशा ओहने भऽ गेल। मुदा कहबो केकरा करबै। अपन हारल बजितो लाज होइए। मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की?

रघुनाथ- यएह जे गामक समाजमे अखनो बेर-बिपैत पड़लापर एक-दोसरकेँ सहारा भेटै छै, मुदा बजारक समाज तँ ठीक उल्टा अछि। सभ अपने ताले-बेताल अछि। केकरा एते छुट्टी छै जे अनको हाल-चाल पुछत।

कर्मदेव- चाचाजी, अखन हमहूँ धड़फड़ाएले छी। कहियो निचेनसँ गप-सप्प करब। अखन जइ काजे एलौं से गप करू।

रघुनाथ- केहेन काजे धड़फड़ाएल छह?

कर्मदेव- गामक दशा देखि गौंआँक विचार भेलैन हेन जे जेहो सभ बाहर नोकरी-चाकरी करै छैथ हुनको सभकेँ बजा समाजक कल्याण केना हएत तइले एकठाम बैस रस्ता निकाली। सएह कहए एलौं हेन।

रघुनाथ- छाँहो-छुहो तँ किछु कहह।

कर्मदेव- चाचाजी, गाममे जे छैथ हुनका दूधक डाढ़ी जकाँ अपन खेत छैन। जखन कि जे बाहर रहै छैथ, बेसी जमीन हुनके सबहक छैन, तइले बैसार भऽ रहल अछि।

रघुनाथ- विचार तँ बड़ दिव्य छह, मुदा..?

कर्मदेव- 'मुदा' की?

रघुनाथ- 'थाकल पाव पलंग भेल भारी आब की लादब हौ वेपारी।' सोझहे आगूमे देखै छह। धानक खखरियोसँ बत्तर हालत भऽ गेल अछि। जेहो जिनगी बाकी बँचल अछि ओहो पहाड़ जकाँ बुझि पड़ैए।

कर्मदेव- से किए चाचाजी?

रघुनाथ- बौआ, डॉक्टरी छोड़ि आन चीज तँ पढ़लौं नहि, जइसँ दुनियौँ-दारीक बात बुझितौं। ऐ अवस्थामे आब बुझि पड़ैए जे जिनगीए ओझरा गेल।

कर्मदेव- जखने सभ मिलि एकठाम विचार करब तखने ने अहूँक ओझरी छुटि जाएत।

रघुनाथ- (कनी गुम रहि, किछु सोचि... ।) बहरबैया सभ रहता?

कर्मदेव- आश्वासन तँ सभ देलैन अछि। तखन तँ..?

रघुनाथ- कहियाक समय बनौलैन?

कर्मदेव- समय तँ समाजे बनौने छैथ। अहाँकेँ जानकारी दिअ एलौं। रवि दिन दू बजेसँ बैसार छी।

रघुनाथ- बड़ बढ़ियाँ। जरूर भाग लेब। परसूए सेवा-निवृत्ति सेहो भऽ रहल छी।

कर्मदेव- परसूए सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी?

रघुनाथ- (मिरमिराइत... ।) हँ, बौआ।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...।) चाचाजी, अहीं सन-सन लोकक जरूरत समाजकेँ छइ।

रघुनाथ- से की?

कर्मनाथ- ऐठामक काज ने हरा गेल। मुदा गाममे अहाँ सभले ओतेक काज अछि जे कएले ने पार लागत।

रघुनाथ- (किछु सोचैत, मुस्कियाइत... ।) बेस कहै छह बौआ।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1100

दसम दृश्य

(घनश्यामक घर। कृष्णदेव, घनश्याम, मनमोहन आ रघुनाथ बैसल। चाह-पान, सिगरेट चलैत... ।)

घनश्याम- कर्मदेव जे किछु कहलैन, तैपर तँ अपनो सभ विचारि लेब किने?

कृष्णदेव- अबस्स-अबस्स।

घनश्याम- एक तँ बैंकक नोकरी तहूमे ब्रांचक जवाबदेही, भरि दिन लोकक चरबाहि करैत-करैत परेशान रहै छी। जइसँ गाम-समाजक कुशलो-छेम नै बुझि पबै छी। तँए अपने दिशा-निर्देश दियौ।

मनमोहन- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ घनश्याम भाय बजला।

कृष्णदेव- कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ मुदा जे चकचकी अहाँ सबहक अछि से अपन थोड़े अछि।

रघुनाथ- मनक बात अहाँ बुझि गेलौं।

कृष्णदेव- अहाँ सभ कागत-पत्रक बीच रहै छी, हम किताबक बीच रहै छी, अन्तर एतबे अछि। मुदा रहै तँ छी सभ कागजेक बीच।

रघुनाथ- कहलिऐ तँ बड़ बढ़ियाँ मुदा हम सभ सादा कागतक

बीच रहै छी आ अहाँ सजौल कागतक बीच रहै छी।

कृष्णदेव- सभकेँ अपन-अपन बुझैक दायरा होइ छै तँए अहूँ सबहक विचारकेँ नकारि नहियेँ सकब। मुदा किछु छिपा कऽ बाजब उचित नहि, तँए..?

रघुनाथ- 'तँए' की? जखने अपन-अपन विचार सभ व्यक्त करब तखने ने चारि परिवारक तीत-मीठ सोझहामे औत। जखने तीत-मीठ सोझहामे औत तखने ने किछु...।

कृष्णदेव- ई बात तँ सभ बुझै छिऐ जे गामक-समाजक- पढ़ल लिखल अपने सभ छिऐ। मुदा अपनो सबहक बीच तँ चारि रंगक जिनगियो अछि। जैठाम अहाँ सभकेँ दरमाहाक संग आनो आमदनी अछि तैठाम हमरा तँ सिरिफ दरमेहेटा अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...।) हँ! ई तँ अछि।

कृष्णदेव- मुदा परिवार तँ जहिना अहाँ सबहक अछि तहिना सबहक अछि। खेनाइ-पीनाइ, कपड़ा-लत्ता आ पढ़ाइ-लिखाइ तँ सभकेँ छइ। कनी सोचि कऽ देखियौ जे हम अहाँ सभसँ पछुआएल छी कि नहि।

रघुनाथ- मानै छी। मुदा गामक बैसारमे गामक चर्च हएत किने। तइ हिसाबसँ तँ सभ जमीनदारे छी। गामक बारहअना जमीनक मालिक तँ अपने सभ छिऐ किने।

कृष्णदेव- हँ, से तँ छीहे। मुदा ओझरियो तँ असान नहियेँ अछि। जइ तरहक जिनगी बनि गेल अछि ओ दरमाहासँ पूरा नै पबै छी। अपने गाममे नै रहै छी जे खेतियो करब, तैपर

सँ जँ एको धूर बेचब तँ प्रतिष्ठा माटिमे मिलत।

मनमोहन- तखन?

कृष्णदेव- जँ सबुर कऽ छोड़ियो देब सेहो नहियेँ हएत।

मनमोहन- ई तँ विचित्र ओझरीमे फँसि गेल छी!

कृष्णदेव- बाल-बच्चाकेँ नीक स्कूल-कौलेजमे नै पढ़ाएब सेहो नहियेँ हएत। किछुए दिनक उपरान्त रिटायर करब तखन औझुका जकाँ दरमहो नहियेँ रहत। तीन -तीनटा कन्यादानो अछि।

रघुनाथ- अच्छा, गामक बैसारक सम्बन्धमे विचार रखियौ।

कृष्णदेव- की विचार राखब, किछु फुरबे ने करैए।

घनश्याम- आब अपन विचार दियौ डॉक्टर साहैब?

रघुनाथ- कृष्णदेव बाबूसँ कनियोँ नीक नहि छी।

घनश्याम- से किए! हुनके जकाँ बेतनेटा पर तँ नै छी?

रघुनाथ- बेस कहलौं। दुरसक ढोल सोहनगर लगै छइ। मुदा लगमे...।

मनमोहन- जँ लग तबला हाथ बजौल जाए, तखन..?

रघुनाथ- बेस कहै छी। तबले जकाँ ढोलोक मुँह छोट आ पॉलिस कएल होइए। रिटायर भेने पेंशनपर आबि गेलौं। जेते जाँच-जूँच करैक यंत्र किनने छी ओ पैछला खाढ़ीक भऽ गेल। दिनो-दिन नवका ठाढ़ भऽ रहल अछि। अपन जे इलाजक प्रक्रिया छल ओ पछैर गेल।

मनमोहन- आगूक की सोचै छिऐ?

रघुनाथ- रोग, रोगी आ इलाज छोड़ि किछु सोचलौं कहिया जे आन बात सोचब।

मनमोहन- जीब केना?

रघुनाथ- जे भोग-पारसमे हएत से थोड़े कियो बाँटि लेत। जाबे सुखक दिन छल सुख केलौं, दुखक दिन औत दुख करब। यएह ने भगवानक लीला छिऐन।

घनश्याम- अपने सभ जे एना सोचबै तखन समाज केना आगू बढ़त? समुद्रक ज्वार जकाँ तँ समाजक गति नहि होइत।

रघुनाथ- (कनी गुम्म भऽ, मुड़ी डोलबैत...।) प्रश्न तँ विचारणीय अछि। मुदा आगूक स्पष्ट रस्ता कहाँ देखि पबै छी। कनी समय दिअ, पछाइत कहब।

मनमोहन- भाय साहैब, अहाँसँ कनियोँ नीक नै छी।

घनश्याम- (मुस्कियाइत...।) से की! से की?

मनमोहन- ओना पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि। मुदा जे रूखि देखि रहल छी ओइसँ बुझि पड़ैए जे आगूमे बनरफाँस लटकल अछि।

घनश्याम- से केना?

मनमोहन- अपने इंजीनियर बनि गामसँ शहर एलौं आ बेटा एग्रीकल्चर पढ़ि गामेक ब्लौकमे जुआइन करत।

घनश्याम- ई तँ बढ़ियाँ बात।

मनमोहन- अपने केतए रहब। सभ दिन शहरमे रहलौं आब गाममे नीक लागत?

घनश्याम- शहरेमे रहब।

मनमोहन- कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ। अपन बेटा-पुतोहु गाममे रहत। रिटायर भेलापर सरकारीए अमिला-फमिला रंगगर कपड़ा पहिरा विदा कऽ देत। तखन..?

घनश्याम- तखन की?

मनमोहन- बुढ़ाड़ीमे एक गिलास पानियोँ के देत।

घनश्याम- गामे चलि आएब।

मनमोहन- (मजबूरी हँसी...।) सभ दिन पढ़ल-लिखल लोकक बीच प्रतिष्ठा बना रहि रहल छी। मुदा गामक कोन लूरि अछि जे बुधिक उपयोग करब।

घनश्याम- नइ बुझलौं?

मनमोहन- जेकरा जइ काजक लूरि रहल ओ ओहीमे ने बुधियार अछि। मुदा हम?

रघुनाथ- तीनू गोरेक बात तँ सभ सुनबे केलौं। घन श्याम, आब विचार दियौ।

घनश्याम- भाय साहैब, अपने बिगैड़ गेलिऐ।

रघुनाथ- बिगड़ब किए। मुदा...।

घनश्याम- 'मुदा' की?

रघुनाथ- बिनु बुझल पैघ रोग रहितो जँ रोगीकेँ रोगक जनतब नहि दऽ रोगमुक्त होइले दबाइ खाइले कहबै तँ हँसी-खुशीसँ खाइए कि नहि?

घनश्याम- हँ से तँ खाइए। मुदा ईहो तँ होइ छै जे समुचित ढंगसँ रोगक जनतब दऽ इलाजोक प्रक्रियाक जनतब देल जाइ

तँ औरो खुशीसँ दबाइ खाइए।

मनमोहन- हँ, ईहो तँ होइए।

घनश्याम- मनमोहन भाय, जहिना रोगक इलाज डॉक्टर आ इंजीनक इंजीनियर करै छैथ तहिना समाजक कल्याण समाजशास्त्री करै छैथ। मुदा..?

मनमोहन- 'मुदा' की?

कृष्णदेव- (बिच्चेमे...।) समाजशास्त्री तँ हमहूँ छी। जिनगी भरि समाजशास्त्रे पढ़लौं। मुदा...।

घनश्याम- भाय साहैब, अपने अधिकारी विद्वान छिऐ, तँए..?

कृष्णदेव- 'तँए' की?

घनश्याम- हम बैंकर नहि छी, मुदा बैंकक काज केने समाज आ धनक सम्बन्ध थोड़-थाड़ बुझए लगलौं। तँए कृष्णदेव भायसँ आग्रह करबैन जे जँ आदेश दैथ तँ किछु कहबैन।

कृष्णदेव- जखन सभ एक प्रश्नपर बैसल छी तखन आदेश की? अखन तँ सभ अपन-अपन सुझिक अनुसार सुझाव रखि रहल छी।

घनश्याम- अपने तँ किताबमे लिखल पढ़ै छी। मुदा किताबी बात ताधैर ठमकल रहत जाधैर समाजक गतिक अनुकूल चलैत नै रहत।

कृष्णदेव- (साँस छोड़ि...।) हूँ...।

घनश्याम- अखन जइ काजे बैसलौं अछि पहिने तैपर विचार करू। कोनो काज करैक जेतेक इच्छा शक्ति लोकमे रहै छै ओ

ओते आगू बढ़ि कऽ सकैए। तँए, कोनो एहेन समस्या नै अछि जेकर समाधान नै भऽ सकैए। सभ कियो आदेश दी तँ..?

तीनू गोरे- (कृष्णदेव, रघुनाथ आ मनमोहन, तीनू गोरे एकसंग... ।) आदेशे-आदेश। खुलि कऽ बाजू।

घनश्याम- रघुनाथ भाय छैथ, शहरमे पछैर रहला अछि मुदा गाम तँ ओइ जगहपर ठाढ़ अछि जइ जगहपर रोगक इलाज लेल अखनो झाड़-फूक आ टोना-टापर होइए।

रघुनाथ- (मुस्की दैत... ।) बेस कहलौं।

घनश्याम- अहिना सभ समस्या अछि। जरूरत अछि एक-एक समस्यामे एक-एक आदमीकेँ सटाएब। जखने समस्यासँ आदमी सटत तखने... ।

रघुनाथ- ठीके कहै छी घनश्याम। गामक सम्बन्धमे..?

घनश्याम- भाय, एक तँ ओहिना बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ि गाम अधमरू भऽ गेल अछि, तैपर लोकोक किरदानी तेहेन भऽ रहल अछि जे औरो गर्तमे जा रहल अछि।

कृष्णदेव- ऐठाम चारिये गोरे छी तँए सबहक–माने सौंसे गौंआँक–बीचमे बैस जेतेक विचार करब ओते अधिक नीक हएत।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1042

एगारहम दृश्य

(नसीवलालक दरबज्जा। कर्मदेव आ नसीवलाल गप-सप्प करैत... ।)

नसीवलाल- काजक की समाचार अछि, बौआ कर्मदेव?

कर्मदेव- तीत-मीठ दुनू अछि।

नसीवलाल- (मुस्कियाइत... ।) तीत-मीठ दुनू अछि! बेसी कोन अछि?

कर्मदेव- स्पष्ट कहाँ बुझि पौलौं। जँ स्पष्ट रहैत तँ दुनूकेँ मिला कहितौं किने।

नसीवलाल- ओ मिलबो मोसकिल अछि।

कर्मदेव- ओ केना मिलत?

नसीवलाल- प्रकृतिक अद्भुत खेल अछि। किछु वस्तु एहेन होइए जे अपन सुआदकेँ औरो गाढ़ बनबैए आ किछु वस्तु ओहनो अछि जे अपन सुआदे बदैल लैत अछि। तीतसँ मीठ आ मीठसँ तीत भऽ जाइत अछि आ किछु एहनो अछि जे ने तीते अछि आ ने मीठे। दुनूक बीचमे अछि।

कर्मदेव- एहेन पेंचगर स्थितिमे कोनो ओझरीकेँ सोझराएब कठिन अछि।

नसीवलाल- नहि। एहेन कोन दुख अछि जेकर दबाइ नइए। भलेँ ओ दबाइ बुझबसँ बाहर किए ने हुअए।

कर्मदेव- तखन?

नसीवलाल- सभ खेल जिनगीए-ले चलैए। ऐ प्रश्नक उत्तर दू गोरेक बीच नै भेटत। प्रश्नो ओझराएल अछि। ओझरियो ओहन लगल अछि जेकरा सोझराएब तेतैर आ अमतीक मिलल सुआदकेँ बेराएब सन अछि।

कर्मदेव- (विहुसैत... ।) आगू की करब?

नसीवलाल- बैसारक जानकारी भेलापर के की कहलैन?

कर्मदेव- बैसारमे भाग लेबाक आश्वासन तँ सभ देलैन।

(आभा आ शान्तीक प्रवेश... ।)

नसीवलाल- आभा आ शान्ती तँ आबिये गेली। चारि गोरे सेहो भेलौं। कनी पहिने आकि कनी पाछू ओहो सभ एबे करता।

कर्मदेव- हुनका सभकेँ बजौने आबी?

नसीवलाल- जरूरी नहि अछि। जिनगी दू रस्ते चलैत अछि। एक काजक सवारीसँ दोसक खाली-खाली।

कर्मदेव- की मतलब?

नसीवलाल- काजक सवारी केतबो उभर-खाभर होइत किए ने चलए मुदा सुरो-सुन्दरीसँ बेसी सोहनगर होइए। जइसँ समैयक ठेकाने बिला जाइत अछि।

कर्मदेव- तखन?

नसीवलाल- एबे करता। काजक अपन महत होइए। जे महत सभ

समान दृष्टिए नै बुझै छैथ। तँए ओकर फल समय पाबि नीकसँ बेसी अधले भऽ जाइए।

आभा- हमहूँ घरपर सँ सोझहे कहाँ एलौं। जलखै खा कऽ जे निकललौं से निकलले छी।

कर्मदेव- केतौ बाहर गेल छेलौं?

आभा- गामसँ कहाँ बहराएल छेलौं। मुदा गामोमे तँ रंग -बिरंगक सरोवर, झील, जंगल, पहाड़ अछि। जेकरा पार करैमे सरपट रस्ताक अपेक्षा किछु बेसी समय लगिते अछि।

कर्मदेव- की मतलब?

आभा- मतलब यएह जे एक तँ ओहिना कुम्भकर्णी नीनमे अदहासँ बेसी सुतल अछि। तैपर सँ दुखक दरद सेहो सुता रहल छइ।

नसीवलाल- ई तँ होइते अछि जे जइ खेतकेँ जोत-कोर नै होइ छै ओ रौद-बरसात पाबि परती बनि जाइए। मुदा पृथ्वी पुत्र ओकरो उपजाउ बनाइए लइए।

कर्मदेव- (मुड़ी डोलबैत... ।) हूँ-अ-अ।

नसीवलाल- जे जिबटगर अछि ओकरा परतीए तोड़ब बेसी नीक लगै छइ।

शान्ती- चाचाजी, सोचए लगै छी तँ छगुन्तामे पड़ि जाइ छी जे हम सभ केहेन स्वतंत्र देशक जिम्मेदार नागरिक छी! जिम्मेदारी की छी आ केतए अछि।

नसीवलाल- प्रश्न तँ गंभीर अछि। मुदा बेहद खुशी भऽ रहल अछि जे एहेन प्रश्नपर नजैर तँ जा रहल छह। धन्यवाद।

शान्ती- (उत्साहित होइत...।) चाचाजी जहिना गहबरकेँ आँचरसँ पोछि नोरसँ नीप भक्तिनी एकटंगा दऽ शक्तिसँ शक्ति पबैए तहिना मन हुअ लगैए।

नसीवलाल- विचार तँ बहुत पैघ अछि। मुदा ओइले धरतीमे जमि कऽ पएर रोपए पड़त।

शान्ती- की मतलब?

नसीवलाल- मतलबसँ पहिने ई कहू जे जेकर अगुआइ करै छिऐ ओ केतए ठाढ़ अछि?

शान्ती- ठाढ़ तँ कम्मेकेँ देखै छी। बेसीकेँ तँ जहिना मुइल नढ़ियाकेँ कुत्ता लिड़ी-बिड़ी कऽ खाइत अछि तहिना समस्या खा रहल अछि।

नसीवलाल- समस्याक रंग-रूप केहेन अछि?

शान्ती- केते कहब।

नसीवलाल- किछुओ जँ बाजब, नहि तँ आन केना बुझत?

शान्ती- चाचाजी, (माथक घाम पोछैत...।) कियो खोपड़ी-ले तरसैए तँ कियो ताजमहल-ले, कियो दूधक धारमे नहाइए तँ कियो एक घोंट-ले मरैए।

(सुकदेव, सोमन आ मनचनक प्रवेश...।)

आभा- जहिना मनचन भायकेँ पछुआ रोटी भौजी खुअबै छथिन तहिना गामोक काजमे।

मनचन- (विहुसैत) भरि दिन अहूँ बाल-बोधकेँ सिखबैत हेबै जे

खाइमे आगू आ काजमे पाछू रही।

आभा- से कहाँ सिखबै छिऐ। सिखबै छिऐ जे पहिने करू तखन खाउ। ककहारामे जहिना डारि-पात छुटैत जाइए तहिना।

मनचन- (अधहँसी हँसैत... ।) भूखे भजन ने होई गोपाला।

आभा- कठिया लाड़ैनक कोन काज होइ छै, से तँ..?

मनचन- हँ, से तँ जिनगीमे केते पँचकठिया देखलौं आ आगूओ देखब।

सुकदेव- (दमसैत... ।) रे बुड़िबान, सभ दिन एक्के रंग रहमैं। उमेरक ठेकान नहि छौ?

मनचन- भैया, दुनू हाथ उठा भगवानोकेँ यएह कहै छिऐन जे जहिना जिनगी भरि गाए दूधे दैत रहि जाइए, आमक गाछ आमे फड़ैत रहैए तहिना हँसते-खेलते दिवस काटि ली। की लऽ एलौं आ की लऽ जाएब।

नसीवलाल- अखन जइ काजे सभ एकठाम छी से काज करै जाइ जाउ?

सुकदेव- की बाउ कर्मदेव, जिनका सभ ऐठाम गेल छेलौं ओ सभ औता की नहि?

कर्मदेव- कहलैन तँ सभ। मुदा..?

सुकदेव- 'मुदा' की?

कर्मदेव- पढ़ल-लिखल लोकक कोन ठेकान। एक-एकटा बातक सतरह-सतरहटा अर्थ अगर-मगर करैत बुझै छैथ।

तँए..?

सुकदेव- ‘तँए’ की?

कर्मदेव- यएह जे हमरा गप्पक की माने लगौलैन, से थोड़े बुझै छी।

सुकदेव- गामक-समाजक प्रति किनकर केहेन आकर्षण छैन?

कर्मदेव- ओना सबहक ऊपरा-ऊपरी छैन। मुदा घनश्याम कक्काक किछु विशेष छैन।

सुकदेव- औरो गोरेक?

कर्मदेव- सभ अपने बेथे बेथाएल छैथ। मुदा घनश्याम कक्काक जेहने बेवहार छैन तेहने आगू देखैक विचार सेहो छैन। असकरो जँ ओ आबि जाथि तैयौ बहुत-किछु भऽ सकैए।

नसीवलाल- जँ चौथाइयो बल बाहरसँ भेट जाए तैयौ उठि कऽ ठाढ़ होइमे असान हएत।

मनचन- नसीवलाल भैया, जहिना पानिमे डुमैत चुट्टीकेँ सरलो खढ़ भेटने जान बँचै छै तहिना जँ कनियोँ आस भेटत तैयौ कदमक गाछमे मचकी लगा झूलि लेब। चारियोअनासँ कम भोँट पेने एमेले-एमपी बनि मुर्गी दकरैए आ हम सभ भातो-रोटी नै खा सकै छी।

आभा- अहाँ भोँट दइ छिऐ की नहि?

मनचन- किए ने देबइ।

आभा- केकरा दइ छिऐ।

मनचन- जेकरा जीतैत देखै छिऐ तेकरा।

आभा- से पहिने केना बुझै छिऐ?

मनचन- हद करै छी। जखन जीतक घोषणा होइ छै तखन जा कऽ माला पहिरा दइ छिऐ।

आभा- ओ मानि लइए?

मनचन- किए नै मानत। जे अपने सात घाटक पानि पीब गीरथानि जकाँ बजैए आ पतिवरता कहबैए ओ किए ने मानत।

आभा- तब तँ अहाँ ठकोसँ नमहर ठक छी।

मनचन- से केना?

आभा- ठक तँ ओ भेल जे निरीह, मुँहदुब्बर आ सोझमतियाकेँ ठकैत अछि आ अहाँ तँ ठकक ठक भेलौं।

मनचन- अहिना ने उनटल गंगामे लोक नहा गंगा-स्नानक फल गंगासँ मंगै छैन।

आभा- गंगा दइ छथिन?

मनचन- किए ने देथिन। भलेँ सुनटाक फल देथिन वा नहि मुदा उनटाक फल किए ने देथिन।

आभा- केना दइ छथिन?

मनचन- साँपक केचुआ देखलिऐ हेन?

आभा- किए ने देखबै?

मनचन- की ओइ केचुआमे साँपे जकाँ मुहसँ नाँगैर तक नइ रहै

छइ?

आभा- हँ, से तँ रहै छइ।

मनचन- तखन।

आभा- मुदा?

मनचन- मुदा तुदा किछु नहि। अहाँकेँ बुझैमे फेड़ अछि। देखै छिऐ किने जे गामक सभ कहत जे एकोटा ऑफिसमे बिना घूस नेने काज नै चलैए।

आभा- हँ से तँ नहियेँ चलैए।

मनचन- मुदा पाइ लऽ लऽ भोँट दइ छिऐ सेहो कहियो ने।

आभा- यएह तँ बुझैक बात अछि, जखन भोँटरसँ भोँट लेनिहार धरि घुसेक वेपार करए लगत तखन जुग बदलतै।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1055

बारहम दृश्य

(गामक विद्यालयक आँगन। बच्चा सभ फील्डपर खेलैत। रस्ता धऽ कऽ राही सभ चलैत। गोल-मोल बैसार। एकठाम कृष्णदेव, मनमोहन आ रघुनाथ बैसल। बगलमे घनश्याम, नसीवलाल, सुकदेव आ गामक लोक बैसल... ।)

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ... ।) आजुक बैसार लेल सभकेँ धन्यवाद दइ छी जे अपन व्यस्त समयमे आबि गामक बैसारकेँ शोभा बढ़ौलैन। तैसंग होनहार कर्मदेवकेँ औरो बेसी बधाइ जे जी-तोड़ि मेहनत कऽ बैसार करौलैन।

मनचन- भैया, अहाँ कर्मदेवक प्रशंसा बेसी केलिऐन।

नसीवलाल- कम्मे केलिऐन। नवयुवक आ बाल-बच्चाक–बेटा-बेटीक–बेसी प्रशंसा केतौ-केतौ अधलो होइ छइ।

कृष्णदेव- (चौंकैत... ।) से केना?

नसीवलाल- मनुखकेँ घरसँ बाहर धरि प्रशंसा-निन्दासँ परहेज करक चाही।

कृष्णदेव- तखन?

नसीवलाल- उचित सीमाक उल्लंघन होइते बनै-बिगड़ैक संभावना

बढ़ि जाइत अछि।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत... ।) सम्भव अछि।

नसीवलाल- सम्भव रहितो कठिन अछि, मुदा जाधैर सम्भव नहि हएत ताधैर समाजक गाड़ियोकेँ लीख दऽ कऽ ससरब कठिन अछि।

घनश्याम- नीक-अधलाक विचार तँ करबाके चाही किने।

नसीवलाल- निसचित करबाक चाही, मुदा हटि कऽ नै सटि कऽ।

घनश्याम- की मतलब?

नसीवलाल- मतलब यएह जे जहिना समुद्रक किनछैरक पानि कम गहींरमे रहितो अगम पानिसँ मिलल रहैए तहिना।

(कनडेरिये आँखिए रघुनाथ, मनमोहन नसीवलाल दिस देखैत तँ मनचन, सुकदेव कृष्णदेव दिस। अपन-अपन मनोनुकूल मुँहक रूप सेहो बनबैत... ।)

घनश्याम- (ठहाका मारि... ।) अखन धरि गामक बैसार कोन रूपे चलि रहल अछि नसीवलाल भाय?

नसीवलाल- घनश्याम बाबू, जहिना बन्दूकक अनेको गोली, गोली खेनिहारकेँ देहक कोनो अंग चिन्हार नै रहैत तहिना गामो-समाजकेँ भऽ गेल।

घनश्याम- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

नसीवलाल- ओना अखन जइ काजे सभ एकठाम बैसलौं पहिने से काज हेबा चाही। मुदा ऐ तरहक बैसार पहिल-पहिल अछि तँए किछु आनो बात चलबे करत।

मनचन- भैया, हनुमानजी जकाँ कियो छाती फाड़ि देखबैए आकि पेटक बात आ हाथक काजेसँ देखबैए?

(मनचनक बात सुनि कृष्णदेव हंसक हिलुसैत आँखि जकाँ देख... ।)

कृष्णदेव- अखन धरि मनचनकेँ बटेदार बुझै छेलौं मुदा से नहि, ओ समाजक पटेदार छी, हिस्सेदार छी।

(कृष्णदेवक विचार सुनि... ।)

नसीवलाल- जहिना हाथक पाँचो-आँगुर पाँच लम्बाइ-चौड़ाइक होइ छै मुदा हाथक शोभा तँ बरबैरे बढ़बै छै किने।

कृष्णदेव- हँ से तँ बढ़ैबते छइ।

नसीवलाल- तहिना ने सड़क बनबैमे पत्थर बैसौनिहारसँ लऽ कऽ नक्शा बनौनिहार धरिक होइ छइ।

कृष्णदेव- मुदा?

नसीवलाल- हँ, जहिना सिरकट्टी भगवतीक महत होइत तहिना ने मुस्कियाइत खर्गधारी भगवतियोक होइत।

(बिच्चेमे... ।)

घनश्याम- हँ! हेबा चाही। मुदा पहिने दुनूक परिचए हएब जरूरी।

नसीवलाल- निसचित। जहिना भूतपर भविस ठाढ़ होइत तहिना ने मनुखोक पैछला जिनगी ऐगला जिनगीकेँ ठाढ़ करैमे मदैतगार होइत।

मनचन- जँ से नहि हुअए तखन?

नसीवलाल- ओहिना हएत जहिना सत्यवादी हरिश्चन्द्रक पार्ट

(स्टेजपर) कियो शराबी झूमि-झूमि कठही चौकीपर अलापैत।

(ठहाका... ।)

घनश्याम- हँसी-मजाक छोड़ि बैसारक गरिमा बनाउ?

नसीवलाल- (अधहँसी हँसि... ।) बहुत नीक विचार घनश्याम बाबू, देलैन। आइ धरि हृदए तरपैत रहल जे गामोक नक्शा इतिहासक पन्नामे जोड़ाए। से..?

मनचन- भैया, जइ समाजमे प्रोफेसर, इंजीनियर, डॉक्टर, बैंक मैनेजरसँ लऽ कऽ गोबर बिछनिहारि धरि छैथ तइ समाजक इतिहास नै बनइ ओ केतेक लाजिमी अछि।

नसीवलाल- कहलह तँ ठीके मुदा... ।

मनचन- 'मुदा' की?

नसीवलाल- यएह जे, ओना आइ धरिक समाजक पन्ना-पन्ना पढ़ए पड़त। ओकरा तकैमे किछु मेहनत उठबए पड़त। मुदा जँ ओकरा विचारणीय प्रश्न बना रखि आजुक समाजक अध्ययन कऽ निर्माणक संकल्प लेल जाए, तहूसँ काज चलि सकैए।

मनचन- से केना हएत?

घनश्याम- जँ करैक इच्छाशक्ति जगा संकल्पबद्ध भऽ डेग उठाबी तँ भऽ सकैए।

कर्मदेव- घनश्याम काका, अहाँ तँ नारदजी जकाँ छोटका बैंकक मीटिंगसँ लऽ कऽ बड़का बैंकक मीटिंग धरिक अनुभव रखने छी तँए नीक हएत जे अपने समाजक एकटा रूप-

रेखा बना बजियौ?

घनश्याम- बाउ कर्मदेव, कहलह तँ ठीके बाहरी दुनियासँ भिन्न ग्रामीण दुनियाँ अछि तँए जे तरी -घटी गामक नसीवलाल भाय जनै-बुझै छैथ से नहि बुझै छी।

सुकदेव- ई कोनो बड़ पैघ समस्या नै छी। नीक हएत जे दुनू गोरे विचारि कऽ आगूक डेग उठाबी।

(सुकदेवक विचारकेँ मनमोहन आ रघुनाथ समर्थन केलैन। मुदा कृष्णदेव मुँहक बात रोकि लेलैन... ।)

मनचन- (मुस्की दैत... ।) घनश्याम भाइक तेहेन पटपेटा पेट छैन जे नसीवलाल भैयाकेँ पीचिये देथिन।

घनश्याम- (हँसैत... ।) नहि मनचन, मोटेलहा पेट रहैत तखन ने, फुललाहा छी। कोढ़िलोसँ हल्लुक।

मनचन- गणेशजीबला? जे एक-रत्तीक मुसरी मुनहर सन पेटकेँ उठा दौगैत रहैए।

घनश्याम- हँ! हँ! सएह बुझहक।

कृष्णदेव- (रूष्ट भऽ... ।) समैयक उपयोग करू।

घनश्याम- भाय, विचार अछि जे सभ कियो दिलसँ अपन-अपन जिनगीक अनुभव व्यक्त करी। जइसँ एक नव समाज बनैक सुदृढ़ नीब पड़त।

कृष्णदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ। जाधैर गामक दशाक सम्यक चर्च नै हएत ताधैर दिशा निर्धारित करैमे किछु कमी रहबे करत।

नसीवलाल- बहुत बढ़ियाँ विचार कृष्णदेव बाबूक छैन। जाधैर पेटक नीक-सँ-अधला धरिक विचार समाजक बीच नै राखब

ताधैर समाजक अँतरी-मिलान केना हएत?

मनचन- भैया, 'अँतरी-मिलान' केकरा कहै छइ?

घनश्याम- (मुस्की दैत... ।) छाती-मिलानकेँ ।

मनचन- 'छाती मिलान!' छाती मिलान तँ दुइए ठाम... । समधिक संग आ दुनू परानी... । दू परानी..?

घनश्याम- कोन मंत्र पढ़ए लगलह मनचन?

मनचन- व्यासजी आ गणेशजीमे यएह ने शर्त्त रहैन जे बिनु बुझने कलम नै बढ़ाबी ।

घनश्याम- अहाँ तँ शास्त्रो बुझै छी मनचन ।

मनचन- पढ़ि कऽ नहि, भागवत सुनि कऽ । तैँसरा तक अपनो गामक बरहम स्थानमे साले-साल भागवत होइ छेलै किने ।

नसीवलाल- अखन धरि बैसारक मूल विषयपर नै एलौं हेन । अढ़ाइ - तीन घन्टा बीति गेल । ओना, भलेँ हम सभ विषयान्तरे गप-सप्प किए ने केलौं मुदा बेबुनियाद बात तँ नै भेल ।

घनश्याम- आन काजसँ भिन्न बौधिक काज होइए । हाथ-पैरक काज जकाँ लगातार केने काज छुटैक संभावना बढ़ि जाइत अछि । तँए..?

मनचन- घनश्याम भाइक विचारकेँ समर्थन करै छी ।

नसीवलाल- बीचमे टिफीनक आवश्यकता तँ जरूर होइत अछि ।

सुकदेव- पशुपति नाथक दर्शन आ किछु वणिज हएब जहिना दोबर लाभ दैत अछि तहिना बाल-भोग भेलासँ हएत ।

मनचन- बेस कहलिऐ भैया । अखन धरि जे हम सभ समाजमे

टौहकीक संग पहटोमे फँसल छी तेकरो..?

घनश्याम- मनचनक दृष्टिकूट नहि बुझलौं?

नसीवलाल- दोसराक व्याख्यासँ नीक मनचनेक व्याख्या हएत।

मनचन- से किए भैया?

नसीवलाल- हौ मनचन, जमीन-जाल, शब्द-जाल आ वाक्-जालमे सभ ओझराएल छी। तोहर आत्मा की बाजि रहल छह से तोंहीटा बुझै छहक। वाणी होइत जे निकलतह वएह बात तोहर भेलह।

मनचन- भैया, आत्मोक बोली तँ दुबटियापर माने बुधिक मोड़पर हरा जाइत अछि। एक्के विचारकेँ आमक गाछ जकाँ डारि छिटैक जाइ छइ।

सुकदेव- मनचन, गप्पक छीलैन छोड़ह?

मनचन- भैया, जाबे गप्पक छीलैन नहि करब ताबे शीशो जकाँ सुरेब केना हएत। खाएर, जहिना औझुका बैसार ऐतिहासिक भऽ रहल अछि तहिना जे पनपिआइ करब जइमे सभ मिलि बना-परैस सभ मिलि खाएब।

घनश्याम- मनचन, जे कहलक ओ आब नहि छइ। सभठाम चलै छइ।

मनचन- आँखिक सोझहामे जातिक आ दू सम्प्रदायक बीच खानो-पान आ प्रेमसँ बिआहो होइत देखै छी। मुदा सर्वसम्मतिसँ किए ने घोषणा कऽ दइ छइ। जखन कि धरतीसँ अकास धरि उड़ियाइत अछि।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1027

तेरहम दृश्य

(दोसर बैसार... ।)

घनश्याम- मनचन, बरी बड़ सुन्दर बनल छेलह। नून देनिहारकेँ चाबस्सी दइ छिऐन।

मनचन- हमरा रिझबै छी। दू सालसँ सभ नोनगर भोज विन्या समे हमहीं नोन दइ छी।

घनश्याम- किए?

मनचन- गाममे बारहअना लोक रोगीए-टट्टी अछि। कियो नून बाड़ने अछि तँ कियो अधे खाइए। भोज तँ सामुहिक छी। एकठाम बैस खाएब।

घनश्याम- दोसरो चाबस्सी दइ छी मनचन।

मनचन- से किए?

घनश्याम- अखन धरि हमहूँ नहि गौर केने छेलौं जे अहाँ केने छी।

मनचन- भाय, अहाँक सोझहामे बजैत संकोच होइए। मुदा अपना घरमे लोक नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बजैत अछि, तँए..?

घनश्याम- चुप किए भेलौं। आइ धरि जे आनन्द जिनगीमे नहि भेटल छल ओ भेट रहल अछि।

मनचन- केना?

घनश्याम- अपनासँ ऐगला लग जी हुजुरी करए पड़ैए आ पैछलाकेँ जी-हजुरी करबै छिऐ। जिनगीक कोनो आड़िये-धूर नै अछि।

सुकदेव- मनचन, मुँह बन्न करह। बैसारक महत होइ छइ। दोसरो गोरेकेँ अवसर दहुन?

आभा- एक तँ उमेरे केते भेल हेन। मुदा जेतबे अछि तइमे आइ जेते समाजक बीच आएल ओते...।

नसीवलाल- कोनो गलत आकि सही परम्परा ओतबे दिन चलैत अछि जेते दिन लोक चलबैत अछि। ऐ दिस विवेकीकेँ जरूर नजैर देबाक चाहिऐन।

आभा- की नजैर?

नसीवलाल- यएह जे पाछूसँ अबैत बेवहार आजुक समयमे अनुकूल अछि वा नहि। विवेकी मनुख होइक नाते सबहक दायित्व बनै छैन जे जे सनातनी बेवहार अछि ओ जीवित रहए।

आभा- सनातनी बेवहार की?

नसीवलाल- परिवर्तनशील बेवहार।

शान्ती- काका, गलत बेवहार समाजमे पैसल केना?

नसीवलाल- ने एक बेर पैसल आ ने एकदिन पैसल। घुसकुनियाँ-ओंघरनियाँ दैत पैस अंकुरित भऽ विशाल वृक्षक रूपमे बदैल गेल, जइसँ लोक, परलोकक संग विश्वक नक्शे बदैल गेल।

शान्ती- डॉक्टर काका, अपने किछु..?

रघुनाथ- देखियौ, जहिना रामायणमे तुलसी कहने छैथ- हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' तहिना अछि। ओना, दुनियाँक सभ मनुखकेँ किछु आवश्यकता आ गुण एक तरहक अछि, मुदा..?

शान्ती- 'मुदा' की?

रघुनाथ- यएह जे किछु एहनो अछि जे सभकेँ फुटो-फुट अलगो-अलग होइए। ओना हमहूँ एकभग्गुए भऽ गेल छी। समाज अध्ययन तँ विशाल अध्ययन छी किने, तँए...। कृष्णदेव बाबू आ मनमोहन बाबू बुझा सकै छैथ।

मनमोहन- भाय, जहिना अहाँ रोग आ रोगीक बीच रहलौं तहिना हमहूँ छी। मुदा मनक बात छिपाइयो कऽ रखब उचित नइ बुझै छी।

सुकदेव- हृदैक बात इंजीनियर साहैब बजला।

मनमोहन- जेना-जेना समय बीति रहल अछि तेना-तना लोकोक जिनगी बदैल रहल अछि। पहिलुका लोक सोल्होअना शरीरसँ श्रम कऽ शरीरक रक्षा करै छला।

सोमन- जेना आइ देखै छिऐ तेना नै छेलइ?

मनमोहन- नहि।

सोमन- (किछु शंका करैत...।) इंजीनियर साहैब, केते दिन भेल से तँ नीक जकाँ मन नै अछि मुदा अहिना एक बेर रौदी भेल से मन अछि। जहाँ-तहाँ लोक कमाइ-खटाइले भागल। हमहूँ भोलबा काका सेने कलकत्ता गेलौं।

आभा- कलकत्ता गेल छी?

सोमन- गेले नहि छी दू साल ठेलो चलौने छी। जइसँ सभ गली - कुच्ची देखल अछि।

आभा- केना ठेला चलबै छेलिऐ?

सोमन- छातीमे ठेलाकेँ अरा दुनू हाथसँ दुनू भागक डन्टा पकैड़ ठेलै छेलौं।

आभा- इंजीन गाड़ी सभ नै छेलइ?

सोमन- छेलइ। जीपे-कारक कोन बात जे बड़का-बड़का कोठा, करखन्ना आ दोकान सभ सेहो छेलइ। जेहेन ओइठामक दोग-सान्हिक सड़क अछि तेहेन तँ अपना सभ दिस अछियो नहि।

घनश्याम- बात दोसर दिस बढ़ल जाइए।

मनमोहन- बड़ बढ़ियाँ, घनश्याम भाय कहलैन। एक तँ दैवी प्रकोप माने बाढ़ि, रौदीसँ अपन इलाका पछुआएल दोसर मनुखोक दोख कम नइ छइ। जे इलाका जेते पहिने जागल ओ ओते अगुआएल।

आभा- कनी सोझरा दियौ काका।

मनमोहन- (मुस्की दैत... ।) पहिने जंगली अवस्थामे अपना सबहक पूर्वज छला। हाथे-पैरसँ सभ किछु करै छला। जेना-जेना बुइध-अकील बढ़ैत गेल तेना-तेना आगू मुहेँ ससरैत गेला। हथकर्घासँ पाँच सीढ़ी आगू बढ़ि आइ

कम्प्यूटर-युगमे पहुँच गेल छी।

आभा- ऐसँ आगूओ बढ़त?

मनमोहन- निसचित बढ़त। निचेनमे कहियो औरो कहब। अखन जइ काजे एकत्रित भेल छी तेकरा आगू बढ़ाउ।

सोमन- भाय, हम सभ ने कहियोकाल मासुल दऽ कऽ बस, जीप आकि कोनो गाड़ीपर चढ़ै छी। अहाँकेँ तँ अपने अछि।

मनमोहन- से तँ अछिए।

घनश्याम- ओना बाढ़ि रौदी दुनू जनमारा छी। मुदा आइ रौदीक विचार करू।

शान्ती- मैनेजर काका, अहाँ सभ तरहेँ ऊपर छी। ओना समाजक किछु भारो ऊपरमे अछि, तँए चाहब जे झगड़ा-झंझटसँ नहि, विचारक रस्तासँ समाज आगू बढ़ए।

घनश्याम- विचार तँ अपनो सएह अछि। मुदा नहियोँ चाहलापर केते-गोरेकेँ बैंकक लोनमे जहल पठबए पड़ैए आ चौकैठ-केबाड़ उखाड़ए पड़ैए।

शान्ती- से किए?

घनश्याम- (विस्मित होइत...।) की कहब बोरिंग -दमकलसँ लऽ कऽ गाए पोसैक लोन उठा लोक सराध-बिआहक भोज

कऽ पूजी नष्ट कऽ लैत अछि आ समयपर आपस नइ कऽ पबैत अछि।

शान्ती- तखन?

घनश्याम- औझुका बैसार तँए ऐतिहासिक अछि जे समाज अपन कल्याणक दिशा अपने निसचित करैथ।

नसीवलाल- जुग-जुगान्तरसँ जे मनोवृत्ति बनि गेल अछि ओकरा एकाएक नै बदलल जा सकैए। मुदा बिना बदलने काजो नहियेँ चलत, तँए जरूरी अछि जे उत्पादन आ उपभोगकेँ नीक जकाँ सभ बुझी।

घनश्याम- जुगक अनुकूल विचार अछि।

सुकदेव- घनश्याम बाबू, गामक बारहअना जमीन हुनका सबहक छिऐन जे गाम छोड़ि अनतए जा नोकरी करै छैथ। जखन कि खेती केनिहारकेँ अपन खेत नै छिऐन।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...।) हँ से तँ अछिए।

सुकदेव- तैबीच केना सामंजस हएत?

घनश्याम- ओना अपना सभ बुझै छी जे अंग्रेजकेँ भगा हम सभ स्वतंत्र भेलौं मुदा से नहि छी। जखन देशक शासन आ सम्पैत सबहक सझिया भऽ जिनगीक समुचित विकास दिस बढ़त तखन हएत।

रघुनाथ- (हृदए खोलि...।) मन हल्लुक करै दुआरे अपन बात कहै छी। जहिना जुआनीक उमकीमे गाम छोड़ि शहर गेलौं तहिना आइ बुझि पड़ैए जे.. ?

मनमोहन- रुकलौं किए?

रघुनाथ- संकोच होइए। जैठाम छी तैठाम निहत्था भऽ गेलौं। जिनगीक सभ किछु छीना रहल अछि। मुदा गाममे सभ किछु देखि रहल छी।

मनमोहन- संकोच किए होइए।

रघुनाथ- पूजी नष्ट होइत देखि रहल छी। जइले जिनगी गमेलौं सएह..?

मनमोहन- डॉक्टर साहैबसँ कनियोँ नीक नहि छी। ओना डॉक्टर साहैबकेँ सभ किछु भेट जेतैन मुदा..?

रघुनाथ- (मुस्की दैत...।) 'मुदा' की?

मनमोहन- एग्रीकल्चर शिक्षा पाबि बेटा गाममे रहत आ अपने शहरमे। बुढ़ाड़ीमे एकलोटा पानियोँ के देत।

सोमन- अहाँक गाम छी, खेत-पथार छी। अहाँक सुआगत अछि जे गाम आबि अपन जिनगीक अनुभव अनाड़ी-धुनाड़ीकेँ दिऐ।

कृष्णदेव- अखन हम तनावमे चलि रहल छी। मुदा तैयो कहै छी

अहाँ सबहक विचारानुसार जीबैक कोशिश करब।

शान्ती- घनश्याम काका, आगूक भार अहाँ ऊपर?

घनश्याम- गामक भाग जगि गेल। पूजीक जेते जरूरत हएत ओ बैंकसँ दिआ देब। भने एग्रीकल्चर ग्रेजुएट गाममे रहता, हुनका माध्यमसँ गामक योजना बना उन्नैत खेती आ खेतीसँ जुड़ल कल-कारखाना लेल परियासरत् रहब।

शान्ती- (हँसैत... ।) जिनगीक सार्थकता पाबि रहल छी।

घनश्याम- किछु करैक संकल्प सभ लिअ। जखने सामुहिक डेग उठत तखने रस्ता धड़ैमे देरी नहि लगत।

नसीवलाल- सबहक दुख-सुख- सहबहक छी।
सबहक इज्जत-सबहक छी।

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1019

समाप्त।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियें-मनियें पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- जारी...

❑❑❑
❑❑
❑

Notes